संतमत

संत साधु राम जी

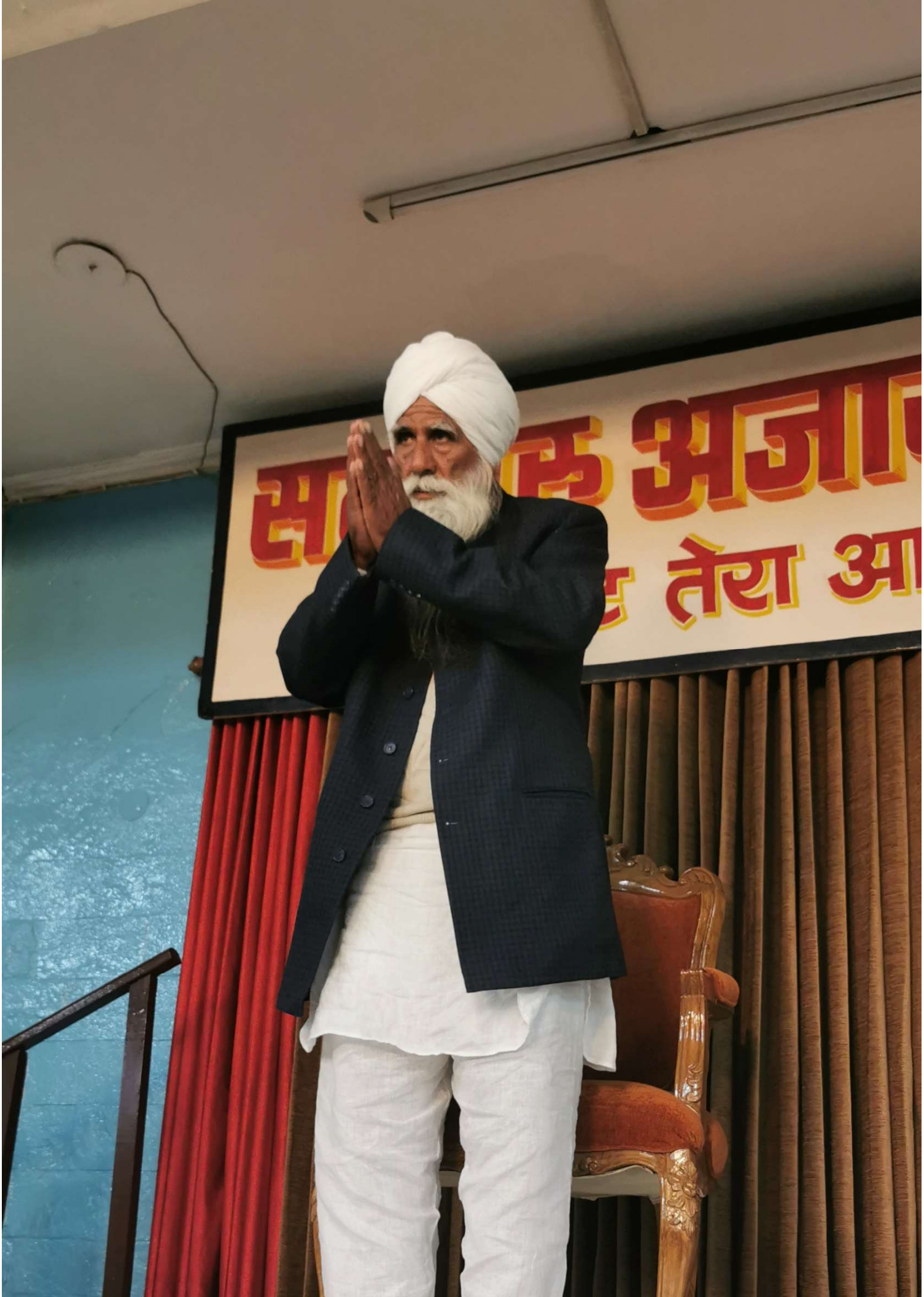

परमात्मा कहाँ रहता है?

परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है। हमारा मन बाहरमुखी हो गया है और उस परमात्मा को बाहर ढूंढ रहा है। सतगुरु अजायब सिंह जी कहते थे कि मैंने बहुत कर्मकाण्ड किए लेकिन बाहर कुछ नहीं मिला। जब वे महाराज किरपाल के चरणों में गए, तो पता लगा कि पूरे गुरु की जरूरत है।

गुरु के बिना ना तो हम अंदर जा सकते हैं, और ना ही उस धुनबाणी को सुन सकते हैं।
जिसने यह दुनिया बनाई है, इस सृष्टि की रचना की है, उसका ही यह रास्ता बनाया हुआ है।
अगर कोई तीर्थ है तो वह हमारा शरीर है। शरीर के अंदर ही आत्मा और मन की मैल उतरती है।
सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि जितना हम पढ़ने में वक्त लगाते हैं, अगर उतना ही सिमरन में लगाएं तो मन की सफाई हो जाती है। मन साफ़ हो जाता है।

सुबह तीन बजे अमृत-वेला होता है। उस समय कोई आवाज नहीं होती है। मन और आत्मा बाहर से घूम कर आए होते हैं। अमृत-वेले भजन सिमरन ज्यादा हो जाता है। सुबह तीन बजे उठकर, एक आसन पर बैठ कर, दो-तीन घंटे सिमरन प्यार के साथ करें।

यह मन हठीला है, और हठ करता है। जब यह हठ करता है तो इसे सिमरन में बार- बार बिठाओ। जो अंदर धुन आवाज आ रही है, उसे सुनना है। जब यह मन भजन में बैठ जायेगा, और सिमरन के साथ जुड़ जायेगा, तो वह शब्द-धुन इसे सुनाई देने लग जायेगी। अब हम बाहर देख रहे हैं। जब आंखें बंद कर मन का ख्याल अंदर जाता है, तो जैसा हम बाहर देख रहे हैं, वैसा ही अंदर देखने लग जाते हैं।

महाराज जी कहते हैं, "आया बन्दे तरण दा वेला, लगयां ऐ तूं करण कवेला, दिन राती करके बंदगी नूं, दुनिया दे बंधन तोड़ दयो"।

आत्मा मन के काबू आयी हुई है और मन इन्द्रियों के काबू आया हुआ है। इन्द्रियां भोगों के रस में लिपटी हुई हैं। यह सारा उलटा हो गया है। मन ने आत्मा का कहना मानना था, और इन्द्रियों ने मन का कहना मानना था। हमारा हृदय उलटा हो गया है।

पल्टू साहब कहते हैं कि हृदय में जोत जग रही है, और बिना बत्ती और तेल से जल रही है। हमारे जन्म से लेकर हमारी मृत्यु तक यह जोत अंदर जलती रहती है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि तू वक्त को क्यों बर्बाद कर रहा है, यह चार दिन की जिंदगी मिली है। दुनिया के बंधन तू सिमरन करके तोड़ ले।

बाहर स्थूल माया है, और अंदर सूक्ष्म माया है। हठ-कर्म के साथ हम शरीर को तो रोक लेंगे, पर मन अंदर कल्पना करता जा रहा है। जब तक गुरु नहीं मिलता, नाम नहीं मिलता, और सत्संग नहीं मिलता है, तब तक हमारे मन के बंधन ढीले नहीं होते हैं।

मन ने बड़े, बड़े ऋषि-मुनियों की मिट्टी-पलीत कर दी। अगर उन्हें पूरा गुरु मिल जाता तो सोने पर सुहागा था, लेकिन उनको कोई गुरु पीर नहीं मिला।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "छोड़ अन्न करे पाखण्ड, ना ओह सुहागन ना ओह रंड"। अन्न-पानी शरीर की खुराक है, यह तो इसे देना ही पड़ेगा। बियाबान में चले गए, शरीर को हड्डी की तरह सुखा लिया, पर ऐसे परमात्मा नहीं मिलता।

गुरबाणी का फरमान है, "अपने सेवक की आपे राखै, आपे नाम जपावै। जह, जह काज किरत सेवक की, तहां तहां उठ धावै"।

सतगुरु संगत बनाता है। संगत सतगुरु नहीं बनाती है। नाम अपने आप ही अपनी आत्माओं को इकट्ठा कर लेता है, या उन्हें अपने पास बुला लेता है, या फिर उनके पास चला जाता है। अपने आप ही वह नाम जपवाता है। आप ही कहता है कि तेरा लंगर भरपूर रहे।

सब कुछ परमात्मा के हाथ में है, उसके हुक्म में है।
हमारे मन को हौमें रोग चिपका हुआ है। नाम की कमाई के बिना हौमें रोग, जो मन का रोग है, नहीं उतरता है। बाहरी तौर पर अगर हम बीमार हो जाएं तो डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। अब डॉक्टर की दी दवाई हम समय-समय पर लेते रहेंगे तो तंदरूस्त हो जायेंगे। डॉक्टर हमें परहेज बताता है, और कहता है कि अगर मीठा या खट्टा खाओगे तो मर जाओगे।

जहां काम है वहां नाम प्रगट नहीं होता है। काम और नाम की दुश्मनी है। क्रोध के साथ ख्याल फैल जाता है और एकाग्र नहीं होता।

अगर हम रूहानी मंडल के डाक्टर से दवाई लाते हैं, नाम लेकर आते हैं, और समय- समय पर अगर हम नाम जपेंगे, तो हमारी बीमारी दूर हो जाएगी। मगर हम नाम दवाई लाकर आले में रख देते हैं, और लेते नहीं हैं। नाम समय पर जपें तो मन साफ़ हो जायेगा।

महाराज जी भी कहते हैं, "नाम गुरु दा हर दम रट्ट लै"।
गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि अगर हम गुरु को एक पल के लिए भूल जाते हैं, तो पचास बरस जितना विछोड़ा हो जाता है। गुरु से हम दूर चले जाते हैं।

महाराज जी भी कहते हैं, "सिमरन बाजों बन्दे तैनूं, भैड़ियां जूनां विच जाणा पवे, मन भौंदा नहीं खाणा मिलदा, गंद फूस नूं खाणा पवे"।

ऐसा ना हो की पशु पक्षी बन जाएं, फिर कौन पानी पिलायेगा, खाना खिलायेगा? जो समझ मानस जामें में आ सकती है, वह कैसे आएगी?

पशु-पक्षी को कोई खाना खिलाये तो खिलाये, नहीं खिलाये तो ना ही खिलाये। कोई पानी पिलाये तो पिलाये, नहीं पिलाये तो ना ही पिलाये। जीव भोग-जूनी में चला जाता है, और फिर भोगता ही है।

महाराज जी कहते हैं कि जो अंदर ताला लगा हुआ है, उसकी चाबी नाम है। अंदर जो वज्र किवाड़ लगा हुआ है, वह उसकी दया मेहर से ही खुलता है।

सच्चे गुरु के बिना पता ही नहीं है कि वह दरवाजा है कहाँ? यह शब्द-रुपी गुरु को ही पता है कि यह ताला कैसे खोलना है।

सेवक को जब नाम मिल जाता है तो फिर वह दिन-रात अभ्यास करता है। यह उस सतगुरु को पता है कि उसने कितना अभ्यास करवाना है। सेवक मन-मत त्याग कर गुरुमत पर आ जाता है। सतगुरु हम तेरे बन गए हैं। यह आत्मा तेरी है। "चंगे हैं या माड़े हैं, तूं आपे ही समझा लै"।
गुरु की शरण में जब सेवक आ जाता है फिर सब कुछ गुरु के हाथ में होता है, और गुरु को फिक्र होता है। हम अपने आप नाम भी नहीं जप सकते हैं। अपने आप हम जी भी नहीं सकते हैं। अगर अपने आप जी सकते होते तो मरने की क्या जरूरत है? ना ही हम अपने आप मर सकते हैं।

अगर हम पारिवारिक हैं तो हम सब का एक साथ दाना-पानी होता है। जब तक हमारा दाना-पानी इकट्ठा है, उतने तक ही हम एक साथ इकट्ठे रह सकते हैं। दाना-पानी खत्म हो जाता है तो हम अपने-अपने राह चले जाते हैं।

हमारा मन दूसरे का काम होता देख कर परेशान हो जाता है कि यह ठीक नहीं कर रहा है। कबीर साहब ने कहा है कि तू अपनी गठरी संभाल, दूसरों की ना फोल।

जब जीव सत्संगी बन जाता है तो किसी की निंदा-चुगली नहीं करता है। कबीर साहब ने कहा है कि अगर निंदा करनी है तो अपने मन की कर, अगर बड़ाई करनी है तो सतगुरु की करो। महाराज जी भी कहते हैं, "दर्श पिया किरपाल दा पा लै"।

वैसे जब हम कोई भी सेवा करते हैं, जैसे सफाई की है या लंगर की है, यह सब शब्द-गुरु की सेवा है। इस सेवा से तन और मन दोनों साफ़ हो जाते हैं, अच्छे हो जाते हैं। लेकिन जो उत्तम सेवा है, वह नाम-शब्द की सेवा है। यह तो उस सतगुरु की मौज है कि उसने हमसे कौन सी सेवा लेनी है।

महाराज जी कहते थे कि हठ-कर्म के साथ मन शांत नहीं होता है। ऋषि-मुनियों ने बड़े हठ-कर्म किये हैं, लेकिन मन ने उन सब को मिट्टी में गिरा दिया।

जिस तरह अग्नि के ऊपर राख आ जाती है तो कहते हैं कि आग बुझ गयी है, मगर वास्तव में वह बुझती नहीं है। जब हवा चलती है तो वह आग फिर से सुलग जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, यह पांच अग्नियां ही हैं, जो हमारे अंदर हैं। चाहे आग का भवसागर है या पानी का, यह दोनों ही गुरु के बिना पार करने मुश्किल हैं।

गुरबाणी का फरमान है, "पूरे गुरु का सुन उपदेश, पारब्रह्म निकट कर देख"। गुरु हमारे शरीर के अंदर ही सतगुरु का घर दिखा देता है। हमें कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता है। कबीर साहब ने कहा है, "हींग लगे ना फटकड़ी"। हमें कोई खर्चा भी नहीं करना पड़ता उस परमात्मा को मिलने के लिए।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि हम गृहस्थ हैं। "हसंदयां, खिलेंदयां, खवंदयां बीचे होवे मुक्त"। "गुरुमुख मन समझाई।"

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि अपनी-अपनी जात में रहो, अपनी-अपनी बोली बोलो, अपना-अपना पहनावा पहनो, अपने-अपने धर्म में रहो। लेकिन जो संत सतगुरु तुम्हें युक्ति बताते हैं, वह करो।
हमें नाम मिल गया है, हम सत्संगी बन गए हैं।

हम गृहस्थी हैं, हम किसी का दिल ना दुखाएं। दूसरों को अपने से सवाया समझना है। फीका नहीं बोलना। द्वैत भावना नहीं रखनी। मन को नरम बनाना है। पानी निवाण की तरफ चला जाता है।

कबीर साहब ने भी कहा है कि तराजू के दो पलड़े होते हैं, लेकिन जो पलड़ा झुक जाता है, वह वजनदार हो जाता है। जहां काम है वहां क्रोध है, जहां दया है वहां धर्म है। जहां माफ़ी है वहां परमात्मा आप है।
हमें माफ़ी देनी चाहिए और माफ़ी मांगनी भी चाहिए, ताकि परमात्मा हमें माफ कर दे। माफ़ी मांगनी भी है, और देनी भी है, ताकि हमारा प्यार बना रहे।

सत्संग

सत्संग का मकसद है कि हम सच के साथ जुड़ जाएं।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं कि सत्संग वहां है, जहां सिर्फ वह परमात्मा है। वहां पर ना किसी की निंदा है, ना ही किसी की चुगली है।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, "सत्संग ओत्थे जाणिए, जित्थे एको नाम विखाणिये।"

सत्संग में नाम की महिमा है, गुरु की महिमा है, सत्संग की महिमा है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि संतमत कोई परियों की कहानी नहीं है। इसमें जिंदगी अच्छी बनानी है, जो शब्द नाम से ही बन सकती है। गुरु दया मेहर करता है, जिससे हमारी जिंदगी बदल जाती है। वह कागों से हंस बना देता है।

अच्छी जिंदगी कैसे बनी? उस गुरु ने दया मेहर की और नाम दिया, अपने सत्संग में बुलाया, उसका आज भी हम यश गा रहे हैं, बड़ाई कर रहे हैं।

वह कौन था? वह सतगुरु अजायब सिंह था।

◆❖◆

पल्टु साहब ने कहा है -

"एक घड़ी आधी घड़ी, आधी की पुनि आध, तुलसी संगत साधु की, काटे कोटि अपराध।"

ब्रह्मानंद जी ने भी कहा है -

"सत-संगत जग सार साधो, सत-संगत जग सार रे, काशी नहाये, मथुरा नहाये, नहाये हरिद्वार रे, चार-धाम तीर्थ फिर आये, मन का नहीं सुधार रे"।

◆❖◆

सत्संग में आकर जीव कौए से हंस बन जाता है। सत्संग में आकर जन्म-मरण के चक्कर से जीव निकल जाता है। चौरासी लाख के चक्कर से उसे छुटकारा मिल जाता है।

गुरु की शरण मिलने पर जीव को जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति मिलती है।

सत्संग सुना कर संत मन को पवित्र कर देते हैं। मन को साफ़ करने के लिए ही सत्संग होता है।

◆❖◆

सत्संग में आने वाले जीव को इस जीवन के सभी सुख मिल जाते हैं। सत्संग उस परिपूर्ण परमात्मा का है। सत्पुरुष अपने भक्त से जैसा बुलवाना चाहे बुलवा लेता है।

कोई भी पवित्र स्थानों पर स्नान कर सकता है, लेकिन उससे मन का सुधार नहीं हो पाता है। संतों के सत्संग में आकर मन सुधर जाता है, और यह सच को समझ पाता है।

◆❖◆

हमने कई सत्संग सुने हैं, लेकिन हमने अभी तक अपने मन को नहीं समझाया है, और ऐसा नहीं बनाया है जैसा संतों ने बताया है।

हमने अभी तक ध्यान लगाना नहीं सीखा है।

पूरी तरह से ध्यान लगाने का क्या मतलब है? अगर हमारा ध्यान पूरी तरह से पक गया है तो सतगुरु के माथे से निकलने वाली किरणें और उसमें समायी बाणी को हम देख सकते हैं।

◆❖◆

यदि हम सत्संग में आते हैं तो हमें उससे पूरा फायदा उठाना चाहिए।

जब प्रेमी सत्संग में एक दूसरे से मिलते हैं तो वे दुनियावी बात करने लगते हैं और एक-दूसरे से मेलजोल करने लगते हैं।

नहीं प्यारयो, हमें समझना जरूरी है कि समय कम है, और इस बहुमूल्य अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहिए। इसे दूसरे कामों में खराब नहीं करना चाहिए।

किरपाल सिंह महाराज जी ने कहा है कि अपने घरबार और परिवार छोड़ कर इतनी दूर सफर करके आप लोग आये हैं। अपना इतना समय और पैसा भी खर्च किया है।

अब अगर आप इस समय का पूरा फायदा नहीं उठाते हैं, और इसे बर्बाद करते हैं, तो आपके यहां आने का क्या फायदा है?

◆❖◆

जो भी सत्संग में आकर उसे सुनता है, उसे कुछ तो हासिल होता ही है। चाहे नाम दान मिला है या नहीं, लेकिन जो भी सत्संग सुनता है, उसका फायदा होता है।

सत्संग में शामिल होने वाले गैर-सत्संगी की भी संभाल होती है।

अगले जन्म में उसे एक अच्छे सत्संगी परिवार में जन्म देकर, गुरु उन्हें नामदान देकर, मुक्ति का वसीला बना देता है।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि यदि नाम, गुरु और सत्संग मिलने के बाद भी कोई बुरे कर्म करता है तो ऐसे लोगों को कुछ नहीं मिलता। वे चाहे गुरु को सिर झुका कर कितनी ही बार माथा टेकते रहें।

सत्संग में संत यह बतलाते हैं कि जिंदगी अच्छी बनानी चाहिए।

सत्संग में जब प्रेमी बैठता है तो मन कई बातें सामने ले आता है।

ऐसे में हमें क्या करना चाहिए?

जब हमारे पास खाली समय हो तो मन ही मन सिमरन करें।

अपना कारोबार करते समय भी मन को सिमरन में लगायें। जब घर में हों तब भी सिमरन करें।

◆❖◆

कम से कम दस मिनट पहले सत्संग में पहुंचें और मन को शांत करें, ताकि यह सत्संग को प्रेम से सुन सके, और जो कहा जा रहा है उसे समझ सके।

◆❖◆

यदि कोई जीव एक बार भी सत्संग में आता है तो या तो गुरु उसे दूसरा मानस जन्म देगा या फिर उसे मुक्ति दिलाकर सीधे सचखंड ले जाएगा।

◆❖◆

हम कहते हैं कि मैं सत्संग में जा रहा हूं या सत्संग में गया हूं।

नहीं प्यारयो, यह तब तक ही कोई कहता है जब तक अंदर नहीं गया है। एक बार जब कोई अंदर जाकर अपने गुरु को देखता है, उसे साफ़ नजर आता है कि कोई भी अपने दम पर सत्संग में नहीं आता है।

यह गुरु ही है जो हमें सत्संग में लाता है। उसके अलावा कोई सत्संग में नहीं लाता।

◆❖◆

सिमरन जितना भी कोई कर ले, पर इससे अपनी पूरी कमियों का पता नहीं चलता। और तब तक नहीं पता चलता, जब तक हम एक पूरे गुरु की संगत नहीं करते।

जब हम एक पूरे सतगुरु के सत्संग में जाते हैं तो वहां हमें अपनी गलतियों का पता चलता है।

यह केवल सत्संग ही है जिसमें अपनी गलतियों का और मन की कमजोरियों का पता चलता है।

सतगुरु - सत्पुरुष

शब्द ही परमात्मा है वही कुल-मालिक, करण-कारण, कर्ता-पुरख है।

जब कोई भी पीड़ित आत्मा रोकर उस परमात्मा को पुकारती है, तो उसकी पुकार सचखंड तक पहुंचती है। उस परमात्मा को उस पुकार का जवाब देना पड़ता है, और दुखी आत्माओं के लिए वह इस नाशवान दुनिया में आता है।

◆❖◆

गुरु के बिना नाम नहीं मिलता, और नाम के बिना मुक्ति नहीं है।

◆❖◆

संतमत, गुरुमत, रूहानियत के गुरु ने कोई जात नहीं पूछनी है। प्यारयो, परमात्मा ने हम पर दया करी और वे सब पर दया करते हैं। वे परमात्मा की भक्ति सिखाते हैं, अपनी नहीं सिखाते हैं, उस परमात्मा की जो सब का सांझा है।

इस भवसागर के दूसरे किनारे का किसी को नहीं पता है। ना यह पता है कि यह कितना चौड़ा है, लम्बा है, और गहरा है। यह किसी को नहीं पता है। हम आते हैं, जन्मते हैं, मरते हैं, और दुःख उठाते हैं।

इस भवसागर से उस दयालु सतगुरु की दया से ही पार जाया जा सकता है। उस दयालु ने कृपा की, अपने पास बुलाया, नाम दिया, नाम जपवाया, और आज हम उसका यश गा रहे हैं।

◆❖◆

शब्द ही परमात्मा है, वही कुल-मालिक, करण-कारण, कर्ता-पुरख है। वह नाम, करण-कारण शब्द धुन है, जिसे संत महात्मा हमारे ह्रदय में रख देते हैं।

◆❖◆

गुरु से प्यार कैसे और कब करना है? अमृत वेले थोड़ी रात होती है, और उस समय कोई खड़का भी नहीं होता है। आत्मा और मन दोनों शरीर में वापिस प्रवेश करते हैं, जिससे शरीर भी ताजा होता है, और थकावट भी नहीं होती है। उस समय उस मालिक को याद करो जिसने यह जन्म बख्शीश किया है, वह सारे संसार का मालिक है। सारी दुनिया को चलाने वाला है। वह सर्व सुख देने वाला है।

◆❖◆

संतों की पुकार भगवान तक जाती है। भगवान संतों को याद करता है। संत भगवान को याद करते हैं। इसलिए हम भी उन्हें याद करें। याद करने से हमारा जन्म-मरण खत्म हो जाता है। नहीं तो जीव बार-बार चारों खाणियों में जन्म लेता है, और मरता है, और दुःख उठाता है।

◆❖◆

संत, महात्मा, भगत, मालिक के प्यारे पाप लेने के लिए आते हैं। जब जीव को गुरुमुख नाम की बख्शीश करते हैं, तो उस जीव के पाप अपने सिर पर ले लेते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि आग की एक चिंगारी सूखे घास पर गिरा दें तो वह उसे खत्म कर देती है। संतों के पास राम नाम की जोत होती है, उसके साथ वह हमारे पाप खत्म कर देते हैं।

◆❖◆

महाराज किरपाल भी कहते थे कि संत सिर्फ पाप लेने के लिए आते हैं। प्यारयो, जिसको वह सतगुरु नाम देता है उसके पाप ले लेता है। नाम दे कर साफ़ कर देता है। पवित्र करके, मालिक के दरबार में पेश कर देता है। अर्ज करता है, यह तेरी जीव आत्मा है, इसे संभाल।

◆❖◆

प्यारयो, यह घोर कलियुग है। भवसागर में हमें गुरु ही नाम और सुरत-शब्द का अभ्यास करवा सकता है। बाकी दुनिया की चीजें यहीं रह जानी हैं, हमारे मन का मोह दुनिया के साथ है।

◆❖◆

आत्मा और परमात्मा का मेल है। आत्मा इस दुनिया में आई है और जन्म मरण के चक्कर में पड़ी हुई है। सिर्फ आत्मा ही परमात्मा में मिल सकती है। आत्मा भी शब्द है और परमात्मा भी शब्द है। दोनों अलग, अलग हैं, मगर एक ही घर में रहते हैं। इस शरीर में रहते हैं। अगर कोई ऐसा शब्द-रुपी महात्मा मिल जाए जो हमारा मेल करा दे, तो उसका शुक्र है, शुक्र है।

◆❖◆

किरपाल महाराज भी कहा करते थे कि संत हमारी तरह ही इंसानी जिस्म रखता है।
हमारी तरह ही खाता पीता नजर आता है। लेकिन एक बहुत बड़ा फर्क है, वह यह है कि परमात्मा जो घट-घट वासी है, उसके अंदर प्रकट है।
एक पूरा गुरु वह है जो आपको अंदर शब्द से जोड़ सके और कुछ रूहानियत की पूंजी दे सके।

◆❖◆

"ओ साहां विच साह लैंदा ऐ, हर शह दे विच ओ रहंदा ऐ, अंदरे धुनकारां दिंदा ऐ, संगतो भरोसा करो, महसूस करो, महसूस करो।"

सतगुरु कौन सा नाम देते हैं?

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "अड़ी वे अड़ी, ना कर बन्दे वे अड़ी, लग्गी नाम दी झड़ी, नाम जप सोहनया वे, मौत सिर ते खड़ी"।

कुल मालिक को मिलाने के लिए ही संत सतगुरु नाम देते हैं।
नाम जो है, उसे संत किताबों से पढ़ कर नहीं देते हैं। उनकी अपनी कुर्बानी की हुई होती है उस नाम पर। उस नाम की कमाई करके ही नाम देते हैं।

उस नाम से संत-महात्मा मालिक के साथ मिलाप कराते हैं, और मालिक उस नाम की कमाई से खुश हो कर प्रगट हो जाता है।

जो भगत होते हैं, वह उस सत्पुरुष का सन्देश देते हैं, और कहते हैं कि प्यारयो सब में वह सत्पुरुष है। उससे मिलने की युक्ति भी बताते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि नाम जपने से सारे दुःख खत्म हो जाते हैं, और सारे सुख मिल जाते हैं।
अब हमें नाम मिल गया है, नाम का सहारा हो गया है। अब झूठ, निंदा, चुगली, चोरी, यारी, और ईर्ष्या को छोड़ना है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "रूह मालिक तो होई दूर, एनुं समझौना नी, हुण मिलया मानस जामा, कंत नूं पौणा नी"।
अब हमारी आत्मा का प्यार लगा हुआ है इस दुनिया में। सारी ही दुनिया को मोह ने फंसा रखा है। मन के साथ हमारी आत्मा की दोस्ती है। मन का विचार भोगों में है। इस प्रकार इन्द्रियों ने भोगों में मन को फंसा लिया है। जितने भोग हैं, उतने रोग हैं।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं प्यारयो, "सिमरन करिये, नाम सिमरिये, जिंदगी सफल बना लईए, प्यार गुरु नाल पा लईए"।

महाराज जी भी कहते हैं कि प्यारयो, यह जो समा हाथ में आया हुआ है, यह सदा नहीं रहेगा।
हम देखते हैं कि इंसान जवान होता है, फिर बूढ़ा हो जाता है। उससे चला फिरा भी नहीं जाता है। पूरा देख भी नहीं होता है। किस चीज का मान है? क्या जवानी का मान है? क्या माया का मान है? नाम जपेंगे तो सुख पाएंगे।
सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं प्यारयो, "मान बड़याई मेरा पीछा ना छोड़ें, ये बड़ी दुखदाई री"।
भगत उस भगवान की ही बड़याई करते हैं, अपनी बड़याई नहीं चाहते, और ना ही करते हैं। भगवान ने अपने आप ही उनकी बड़याई करवा देनी है।

"जे हो जाये तेरी मौज दातया, दाणे भुज्जे होए कल्लर उगांवें।"
महाराज जी भी कहते हैं, "असीं हैं यतीम, साडा रखना ख्याल वे"।

शब्द-रूप परमात्मा गुरु के रूप में प्रगट होता है। वह शब्द का सन्देश देते हैं। सब भगत, संत, और महात्मा उस परमात्मा का सन्देश देते हैं।

स्वामी जी महाराज ने भी कहा है, "हंसनी दूध पियो, दूध पियो छान"।
पानी और दूध मिला कर रख देते हैं तो हंसनी पानी छोड़ देती है। यह तासीर उसकी चोंच में होती है। जिससे वह दूध पी लेती है और पानी छोड़ देती है। इसी तरह विषय विकार हैं, जो छोड़ने हैं।
अब हमें नाम मिला हुआ है, और जब हम प्यार से नाम जपते हैं तो उसमें जो अमृत रस है, वह हमारी जीभ पर आता है। हमें फिर पता लगता है कि गुरु ही अमृत रस पिलाता है।

जैसे बच्चा है, उसकी माँ का दूध उस बच्चे के लिए अमृत का काम करता है। वह दूध अमृत के बराबर होता है। नाम के अमृत को पीकर ही हम भगत बन सकते हैं। विषय-विकार छोड़ सकते हैं। काम वासना को छोड़ सकते हैं। जब तक उस अमृत को नहीं पिया जाता है, या गुरु दया नहीं करता है, तब तक हम विषय-विकार छोड़ नहीं सकते हैं।

हम भजन पर बैठते तो हैं, और अच्छे तरीके से बैठते हैं, लेकिन हिल जाते हैं। इससे वह अमृत रस मिलता नहीं है।

हम उस अमृत रस को कैसे पी सकते हैं?

जब हम चोंकड़ी मार कर बैठते हैं और उसका ध्यान दोनों आँखों से थोड़ा सा ऊपर करते हैं।
सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, मैंने अपने सतगुरु को रो-रो कर याद किया।
हम बैठते हैं, पर हमारा मन टिकता नहीं है, फिर अफ़सोस भी है कि मन टिकता नहीं है। कुछ अंदर दिखता नहीं है, अँधेरा ही है।

प्रेमी अपना अनुभव भी बताते हैं। एक बार ही बैठना है जितना समय बैठना है। चार- छः-आठ-बारह घंटे बैठना है, और एक बार ही बैठना है। शरीर को हिलने नहीं देना है। अब शरीर के पीछे ही मन है। शरीर बैठा रहेगा तो मन भी बैठा रहेगा।

प्यारयो, सबसे पहले जिस चीज की जरूरत है, वह है विश्वास। अगर पूरा विश्वास हो गया तो गुरु भक्ति पूरी हो गयी है। जब मुझे नाम मिला तो मुझे पूरा विश्वास था कि मेरा गुरु परमात्मा है।
दूर और पास का कोई फर्क नहीं होता है। औरत और मर्द का कोई फर्क नहीं होता है। रात और दिन का कोई फर्क नहीं होता है। बात हमारे मन की है।

कबीर साहब ने भी कहा है, "मन लागयो मेरा यार फकीरी में, जो सुख पायो राम भजन में, वो सुख नहीं अमीरी में, मन लागयो मेरो यार फकीरी में"।
अब क्या है कि दुनिया की सारी चीजों की तस्वीर सामने रख देता है मन। जब तक मन दुनिया की आस नहीं छोड़ता है, तब तक मन अंदर नहीं जा सकता।
राम को मिलना है, तो छोड़ जगत की आस।

हम दुनिया के भी जो रस-भोग हैं लें, और राम को भी मिलना चाहें, तो यह दोनों काम एक साथ नहीं होंगे, प्यारयो। जब वह राम का रस मिलता है तो दुनिया के सारे रस फीके लगने लग जाते हैं। दुनिया के रस लेंगे तो प्यारयो नरकों में चले जाएंगे। भोगों में जायेंगे, तो भी नरक को जाएंगे।
अगर वह राम-रस पीयेंगे तो सदा के लिए अमर हो जायेंगे, और सारे सुख अपने पास आ जायेंगे।
हमारी आत्मा कमजोर हो गयी है। आत्मा की खुराक सिमरन ही है।
सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "लभ गया लाल एनुं रख लै संभाल वे, नाम जप सोहनया वे, मौत सिर ते खड़ी"।

प्यारयो, नाम बड़े भाग्य से मिलता है। अच्छे कर्म हों तो नाम मिलता है। जब नाम मिल गया है तो इसे संभाल कर भी रखना है।
बुरी संगत को भी छोड़ना है। गंदी चीज है प्यारयो। शराबी के पास जायेंगे तो मन को शराब पीने की आदत पड़ जायेगी। बंदा तो अच्छा है, मगर जब नशा खा या पी लेता है तो बुरा हो जाता है, गंदा हो जाता है, क्योंकि नशे की जो आदत है वह गंदी है।

कबीर साहब ने कहा है-
"मना रे तेरी आदत ने कोई बदलेगा हरी-जन सूर, चोर जुआरी क्या बदलेंगे माया के मजदूर, भांग धतूरा चिलम छतूरा रहे नशे में भरपूर। पांच विषयों में लट पट रहता मतंगे चूर, इनको सुख सपने में भी नाहिं, रहें मालिक से दूर"।

तो प्यारयो हमें नाम मिला हुआ है, सात्विक भोजन खाना है। दाल-फुलका खाना है।
महात्मा मालिक के प्यारे अपने मन को समझाते हैं। जो उन्होंने खाया है वह लिख दिया है कि मैंने यह खा कर सतगुरु की भक्ति की है।

नाम और नामदान

दुःख भंजन तेरा नाम जी, आठ पहर अराधिये।

"रल मिल याद मनौन्दियाँ सईयां, नाम तेरे दियां धुम्मां पईयाँ, तूं अपरम्पार अगम अपारा।"
सब आत्माएं उस परमात्मा की हैं। सब आत्माएं उस परमात्मा के आगे प्रार्थना करती हैं। सब आत्माएं खुश हैं कि आप उनको ले जाने के लिए इस दुनिया में आये हो। कृपया हमें भी अपने साथ ले चलो।

◆❖◆

सतगुरु के पास नाम का जहाज है, जिसमें आत्माओं को बिठाकर वह उनके निजी घर सचखंड ले जाता है। हम इस संसार-रुपी भवसागर को सिर्फ नाम के जहाज में बैठकर ही पार कर सकते हैं। शब्द-नाम की कमाई करके ही हम उस परमात्मा को पहचान सकते हैं। नाम की कमाई करके हम अपने दुखों का नाश कर सकते हैं। हम अपने आप को नाम की कमाई करके बचा सकते हैं। नाम की कमाई करने वाले को कर्मानुसार दुःख आते तो हैं, मगर तंग नहीं करते हैं।

◆❖◆

तन, मन, धन, तीनों नाम की कमाई से साफ़ हो जाते हैं।
"तेरी हरदम याद मना रहे, दर्श दिखा जा तू"।
"नाम जपणा कल विच औखा ऐ, शरणी पै जाना सोखा ऐ।"

◆❖◆

गुरबाणी कहती है, "दुःख भंजन तेरा नाम जी"। तुम्हारा नाम सभी दुखों को नष्ट कर देता है। सिमरन को चौबीस घंटे अगर आप करें तो गुरु का पूरा ज्ञान पा लेंगे।

◆❖◆

नाम सभी बीमारियों की दवा है। नाम से सभी सुख मिलते हैं। सभी बीमारियों के लिए अगर कोई दवा है तो वह है नाम, सतगुरु, और सिमरन।

◆❖◆

तुलसी साहब कहते हैं-
"एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी में पुनि आध, तुलसी संगत साध की हरे कोट अपराध।"

◆❖◆

"सतगुरु सतगुरु बोल प्यारया, सतगुरु नाम अनमोल प्यारया।
दुखां विच जिंदगी ना रोल प्यारया।
नाम दी महिमा सारी गुरुबाणी दसदी, फेर वी क्यों नहीं तैनूं गल ऐहे जचदी।
सब संतां बजाए, कह के ढोल प्यारया।
नाम विच सुख कदे औंदा नइयों दुःख जी, जन्मा-जन्मा दी ऐ मिट जांदी भुख जी।
गुरु-गुरु रट, ना तूं डोल प्यारया।"

◆❖◆

"सच्चे सुच्चे नाम दा जो दे रहा पैगाम जी, इसनूं ध्याइये हर रोज सुबह शाम जी।
रब्ब धरती ते आया, इतबार करलो जी।"

◆❖◆

"मन भटक भटक कर हार गया, अब आ ही गया टिकाने पे।
सतगुरु ने ऐसा नाम का तीर दिया, जो जाके लगा निशाने पे।
नाम शब्द का तीर लगा जब, हो गया ये मन घायल।
रहा ठिकाना नहीं ख़ुशी का, खनकी आत्मा की पायल।
लाख बार समझाया इसको, मान गया समझाने पे।
पहले तो इस चंचल मन ने, एक बात नहीं मानी।
धीरे धीरे आ गया काबू, जब माया सतगुरु की जानी।
अब नाम के नशे में चूर रहे, पहले जाता था मैखाने में।"

◆❖◆

एक बार जब नामदान मिल जाता है तो हम अपने असली घर सचखंड जा सकते हैं। यह संसार हमारा घर नहीं है। जो अपना घर ना हो वहां कौन रहता है? यह शरीर ५०-१०० साल किराए का मकान है, और इसे सभी को छोड़ना होगा।

◆❖◆

गुरु के पास आत्मा को सचखंड ले जाने के लिए नाम का जहाज है। हम नाम के जहाज पर चढ़ कर इस भवसागर को पार कर सकते हैं।

◆❖◆

महाराज जी भी कहते हैं, "सिमरन करीए, नाम सिमरिए, जिंदगी सफल बना लईए, प्यार गुरु नाल पा लईए"।

◆❖◆

शांति नाम में है। जो नाम का अमृत पीता है, वह उसी का हो जाता है।

◆❖◆

जिस तरह पानी शरीर को साफ़ करता है, वैसे ही नाम हमारे अनगिनत पापों का नाश करता है। पापों को खत्म करने का तरीका सिर्फ सिमरन और उस परमात्मा की याद है।
"धन धन राजा जनक है, जिन सिमरन कियो विवेक, एक घड़ी के सिमरन ने पापी तारे अनेक"।
हम अपने पापों के बोझ के नीचे दबे हैं। उस परमात्मा की याद और सिमरन से हम इन पापों को खत्म कर सकते हैं। जब पाप खत्म हो जाते हैं, तब मन साफ़ हो जाता है और हम उस परमात्मा के दर्शन कर लेते हैं।

नामदान

जब वह परमात्मा हमें नामदान की बख़्शिश करता है तो वह हमारी आत्मा को शब्द के साथ जोड़ता है।

जब एक पूरा गुरु हमें नाम दान देता है तो वह आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ता है।
नामदान के समय अनुभव प्रेमी के दृढ़ विश्वास और गुरु को परमात्मा मानकर प्रयास करने के साथ-साथ, गुरु की कृपा, और दया से होता है।
गुरु अपना कमाया हुआ सिमरन देता है, और अपनी दया से अंदरूनी अनुभव देता है।
गुरु ही है जो उस समय आत्मा को परमेश्वर के साथ मिलाता है, और अनुभव देता है।

◆❖◆

महाराज किरपाल सिंह जी कहते थे कि, गुरु तवज्जो देकर आत्मा को संसार से निकालने, रूहानी तरक्की और आंतरिक अनुभव देने की क्षमता रखता है। यह अनुभव नामदान के समय आत्मा के विश्वास पर निर्भर करता है।
जो प्रेमी नामदान के वक्त गुरु के लिए विश्वास और प्यार रखते हैं और कुछ अनुभव करने के लिए दृढ़ संकल्प करते हैं, उन्हें गुरु की दया से कुछ ना कुछ अनुभव होता है।
सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि यदि सेवक अंदर गुरु को देखने की इच्छा और तड़फ रखता है, तो गुरु इसमें सेवक की मदद करता है। लेकिन यदि सेवक को गुरु की क्षमता में संदेह है या अंदर तरक्की करने का दृढ़ संकल्प नहीं है, तो उन्हें अनुभव नहीं होता है।

◆❖◆

हमारे अंदर एक बहुत मजबूत ताला लगा है, जिसको इसका कोई भेदी ही खोल सकता है। नामदान के समय गुरु हमारे सारे पाप ले लेता है। सिर्फ परमात्मा ही हमारे सारे पाप ले सकता है। कोई और किसी के पाप नहीं ले सकता है। कोई रिश्तेदार हमारे पाप लेने के लिए तैयार नहीं है। हमें उसका आभारी होना चाहिए जिसने हमारे पाप ले लिए हैं। वह परमात्मा सचखंड से हमारे पाप लेने के लिए इस धरती पर आया।
कौन था वह? अजायब सिंह।
हे सतगुरु, तुम्हारी आत्मा दुखी है, तुम्हारे दर्शन के लिए तरस रही है।
"शब्द नाल जोड़ दातया, साडे अंदर जो शब्द प्यारा। "
यदि कोई नाम की कमाई करता है, तो अंदर जाकर उस परमात्मा के साथ मिलाप करना आसान हो जाता है।

◆❖◆

उस परमात्मा ने यह कानून बनाया है कि गुरु के बिना कोई भी नामदान नहीं पा सकता है,
और नाम के बिना मुक्ति नहीं है।
गुरु नानक देव जी कहते हैं कि गुरु, नाम और सिमरन के बिना कोई मुक्ति नहीं है।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कितनी किताबें पढ़ी हैं। अगर कोई चार युगों तक भी जिन्दा रहे और पढ़ता रहे, तो भी मुक्ति नहीं है। कोई अन्य साधना या मार्ग मुक्ति नहीं दे सकता, केवल पूरा गुरु ही जन्म-मरण के चक्कर से आत्माओं को रिहा करा सकता है।

जब वह परमात्मा हमें नामदान की बख़्शिश करता है तो वह हमारी आत्मा को शब्द के साथ जोड़ता है।
जो नाम का दान गुरु देता है, वह अमृत है।

◆❖◆

नामदान के वक्त सतगुरु हमारे पिछले सारे पाप खत्म कर देते हैं, और कहते हैं कि कोई नया पाप मत करो।

सतगुरु, सत्संग और गुरु-भक्ति

जो सतगुरु की भक्ति करना चाहता है, भजन सिमरन करना चाहता है, उसे अपना तन, मन, धन गुरु पर वारना पड़ता है। वह नाम मिलने की बाद वही करता है जो गुरु कहता है, और वह नहीं जो मन कहता है। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि गुरु-भक्ति विश्वास पर है। जिसे एक बार विश्वास आ गया, उसका काम बन गया।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "गुरु तो बगैर बन्दे जिंदगी ना रोल"। जंगलों पहाड़ों में अपनी जिंदगी ना बर्बाद कर। जब भी परमात्मा मिलेगा, अच्छे भागों से अगर सोती किस्मत जाग गयी, तो अंदर से ही मिलेगा।

महाराज जी कहते थे कि गुरु को ढूंढने की जरूरत नहीं होती है। गुरु सेवक को अपने आप ढूंढ लेता है। हम जो भी पूजा-पाठ करते हैं, वह प्रभु परमात्मा के मिलने के लिए करते हैं।
महाराज जी भी कहते हैं, "हृदय साफ़ बनाये वे, ओत्थे ही मालिक आए वे"। क्योंकि परमात्मा का निवास हृदय में है।

शरीर के जो नों द्वारे हैं, वे बाहर की तरफ खुलते हैं। वह सच्चा-सुच्चा परमात्मा इन नों में नहीं आता है, वह दसवें द्वार में आता है। वह परमात्मा इतना उच्चा-सुच्चा है तो हृदय को भी वैसा ही बनाना पड़ेगा।
"गुरुमुख मन समझाई "। महाराज जी अपने मन को समझाते हैं कि तूं विषय में इतना मस्त ना हो।
जब तक हमारा सिमरन नहीं पकता है, तब तक हमें अनुभव नहीं होता है।

हमें नाम मिल गया, गुरु मिल गया, और सत्संग मिल गया, लेकिन जब गुरु दया करता है, तब ही हमें अनुभव होता है। चाहे हम पास हैं या दूर हैं, दिन है या रात है, औरत है या मर्द है, लेकिन अनुभव गुरु की दया से ही होता है। हम सिमरन की कोशिश करें और नाम के साथ जुड़ें।

जब हम सिमरन पर बैठते हैं तो हमारे शरीर में दर्द होता है। जब यह मन अपने घर आ गया, तब यह दर्द खत्म हो जाना है और यह फिर नहीं होगा। मन के साथ लड़ाई होती है। मन जब हार जाता है तो अपने घर में बैठ जाता है। इसके बाद बाहर नहीं जाता है, और अनुभव फिर होता ही रहता है।
हम प्यार और भरोसे के साथ अगर थोड़े दिन ही सिमरन करें, तो हमारी गुरु भक्ति पूरी हो जाए। फिर मन बाहर नहीं जाएगा, और अपने घर में बैठ जायेगा।

मन भी हमारे अंदर है, आत्मा भी हमारे अंदर है, और परमात्मा भी हमारे शरीर के अंदर है। गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि एक घर में रहते हुए भी आपस में बोलते नहीं हैं।

गुरु नानक कहते हैं, "हौमें रोग बुरे"। जो हौमें रोग है, इसकी वजह से हमारी अंदर बात नहीं होती है।
सतगुरु अजायब कहते थे कि जब हमारा पर्दा खुल जाता है तो जैसे हम स्थूल शरीर में बात करते हैं, वैसे ही हम गुरु के साथ अंदर बात कर सकते हैं। यहां स्थूल रूप में है, और अंदर सूक्ष्म, नूरी-स्वरूप है। अपनी बात सीधे होने लग जाती है।

गुरबाणी का फरमान है, कि देवी-देवता भी इस शरीर को लोचते हैं। वे अरदास करते हैं कि हे परमात्मा, अगर यह मानस देह मिल जाए तो हम गुरु भक्ति करके, जो मुक्ति का रास्ता है, वह हासिल कर लें, और अपना जन्म-मरण खत्म कर लें।

महाराज जी कहते थे कि ऋषि-मुनि, जिन्हें पूरा गुरु नहीं मिला, मन ने उनकी मिट्टी पलीत कर दी।
हमारा मन अड़ियल है, और अड़ जाता है। कभी सिमरन करता है और कई बार नहीं भी करता। सतगुरु ने जो पांच पवित्र नाम दिए हैं, उन्हें जप कर ही यह मन सही हो सकता है। अच्छा बन सकता है।
आत्मा और मन की मैल उतारने वाली कोई चीज अगर है तो वह नाम है, सिमरन है, और गुरु की दया है।

"नाम सच्चा, गुरु सच्चा, सत्संग सार है।"

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "सत्संग ओत्थे जानिये, जित्थे इको नाम वखाणीऐ"।
सत्संग के जरिये हमें अपने मन की कमजोरियों का और गलतियों का पता चलता है। मन हम से गलती करवा भी लेता है और फिर कह भी देता है कि मैंने तुमसे यह गलती करवा ली है।
महाराज जी भी कहते हैं, "नाम सच्चा, गुरु सच्चा, सत्संग सार है"।

"गुरु तो बगैर बन्दे, जिंदगी ना रोल वे।"

महाराज जी भी कहते थे कि सिमरन अभ्यास से ही मन की मैल उतरेगी।
सिमरन ही परमारथ का सार है, और सिमरन ही हमारी जिंदगी बनाता है। इससे हमारा प्यार गुरु के साथ बनेगा। मालिक के साथ जुड़ा हुआ जोड़ सकता है, और मिला हुआ मिला सकता है।
परमात्मा जीवों पर दया करने के लिए ही आता है।

परमात्मा से मिलना और मुक्ति

यदि मन सतगुरु के दिए सिमरन में लग जाए तो आत्मा मुक्त हो जाती है।

जब आत्मा गुरु पावर के संपर्क में आकर नाम प्राप्त करती है तो उसे मुक्ति का साधन मिल जाता है।
गुरु के पास नाम का जहाज है, जिस पर रूहों को बिठा कर वह सचखंड ले जाता है।

◆❖◆

हे दाता, मुझ पर दया कर, और भजन सिमरन में जोड़।
"आपे तारे ते तारण वाली, आई ऐ इक रब्ब दी जोत निराली।" "ओह तां करदा संभाल सारे जग दी।"
सतगुरु के अलावा कोई भी जीव आत्माओं को मुक्ति नहीं दिला सकता।
सारे ब्रह्मण्ड की रचना करने वाला नाम ही आत्माओं को मुक्ति दिला सकता है।

◆❖◆

जीव पिछले जन्म में किये कर्मों के प्रभाव में हैं। जो हमें मुक्त करने के लिए आता है, उसका कोई कर्म नहीं है। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कुल-मालिक खुद कर्मों से रहित थे, और मुक्ति देने के लिए आए थे। सतगुरु के पास वह ताकत है जो किसी भी समय, जब चाहे मुक्त कर सकती है।

◆❖◆

जब हम नाम के साथ जुड़ जाते हैं तो आत्मा और शक्तिशाली हो जाती है।

◆❖◆

जब हम भजन सिमरन के लिए बैठते हैं तो क्या हमें सिमरन याद रहता है?
जब हम अपना कोई दुनियावी कारोबार करते हैं तो क्या हमें सिमरन याद आता है?
जब हम कहीं भी सफर करते हैं तो क्या सिमरन याद है?
हमें खुद के अंदर झांकना होगा। क्या हमारी किसी के साथ लड़ाई या झगड़ा है?
क्या हमारा किसी के साथ मन-मुटाव है? यह सब तब होता है जब सिमरन रुक जाता है।

◆❖◆

अगर गुरु के लिए हमारे दिल में प्यार है, तो हमें उसके सिमरन के साथ भी प्यार है।
सिमरन को हमने पक्का करना है। चाहे हम कोई दुनियावी काम कर रहे हों, बात कर रहे हों, या कुछ और कर रहे हों, मगर हमारा ध्यान सिमरन की तरफ ही होना चाहिए। हम कुछ भी कर रहे हों, मगर सिमरन चलते रहना चाहिए।

◆❖◆

हर कोई शांति चाहता है। जिनके पास नाम की सौगात नहीं है, वह शांति को कैसे पा सकते हैं? वह कैसे जान सकते हैं कि शांति क्या है? नाम ही शांति है।
जिसे नाम मिला है वही शांति को पा सकता है। जिसके पास नाम है वही अंदर जाकर अमृत पी सकता है। सच्ची शांति इस अमृत में ही है, और उसे वही पा सकता है जिसने यह अमृत पीया है।

◆❖◆

हम आये भी एक जगह से हैं और जाना भी उसी जगह ही है। सिर्फ बिछोड़ा ही है। कलयुग में इस काल के देश में आत्मा आ गई है, और यह अपना सब कुछ भूल गयी है। मोह के बंधे हुए हम बार-बार चारों खाणियों में जन्म लेते हैं।

सुरत-शब्द योग: सिमरन, भजन और ध्यान

सुरत-शब्द योग के अभ्यास से मन अपने घर पहुंचता है।

भजन सिमरन करना उस सतगुरु के दरवाजे को खट खटाना है। उसके दरवाजे पर अरदास करना है, और उसके दर्शन पाने की प्रार्थना है। ध्यान एक प्रार्थना है, "हे सतगुरु, दया कर, अपना दरवाजा खोल और अपना दर्शन दे।"

अंदर सतगुरु को मिलने के लिए सिमरन-भजन (सुरत-शब्द योग अभ्यास) में कड़ी मेहनत बहुत जरूरी है। सुरत-शब्द योग के अभ्यास से मन अपने घर पहुंचता है।

◆❖◆

वह हमारे अंदर दसवें दरवाजे पर बैठा है। शरीर के नौ दरवाजे बाहर की तरफ खुलते हैं।

हमें उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर से मिलना है, जो हमारे अंदर है। अंदर के रास्ते पर सूरज, चंद्रमा, और तारे हैं। यदि हम दोनों आंखों के बीच, थोड़ा ऊपर पहुंच जाएं तो फिर हम इस जन्म-मरण के चक्र से बच जाते हैं।

एक बार जब हमारी आत्मा अंदर जाना शुरू कर देती है तो हमारे अंदर प्रकाश आ जाता है, और हम सूरज, चाँद, और सितारे पार करते हुए पार-ब्रह्म पहुँच जाते हैं। जहां शब्द-रूप सतगुरु हमारे सामने खड़ा होता है। हमें आत्मविश्वास आ जाता है कि हम सही रास्ते पर चल रहे हैं।

जब हम स्थूल शरीर छोड़ कर सूक्ष्म में जाते हैं, तो उस जगह सतगुरु भी सूक्ष्म रूप में होते हैं। जैसे-जैसे हम रूहानी तरक्की करते हैं, वैसे-वैसे सतगुरु भी हमारे साथ चलते हैं।

नाम के सिमरन में तरक्की और गुरु भक्ति हमारे विश्वास पर निर्भर है।

◆❖◆

गुरबाणी कहती है कि नाम सभी दुखों का नाश करता है।

जिस दिल में नाम होता है, उसके सारे पाप खत्म हो जाते हैं।

हम सत्संग में आते हैं, नामदान लेते हैं, और फिर **सिमरन का जाप करके हमारे सभी पाप नष्ट हो जाते हैं**।

◆❖◆

जब हम अंदर जाते हैं, तो हम तारे, चंद्रमा, सूर्य देखते हैं; और वहां उसकी कृपा से गुरु के नूरी रूप को भी देखते हैं। फिर जो अंदर धुनबाणी हो रही है, उसको हम सुन सकते हैं। यह धुनबाणी हर समय हमारे अंदर हो रही है।

◆❖◆

आत्मा शब्द को सुनती है, और शब्द का अनुभव करती है। यह आत्मा और परमात्मा का मिलाप है।

जब आत्मा शब्द को सुनती है तो वह सब कुछ हासिल कर लेती है। आत्मा एक चेतन शक्ति है। जब आत्मा शब्द को सुनती है तो उसे सृष्टि के सभी मंडलों का ज्ञान हो जाता है।

◆❖◆

जब कोई नाम को जपता है, तो विरोधी ताकतें निकल जाती हैं।

"जे वेला वक्त विचारीऐ, तां कितु वेले भगति होई।"

जिसके पास गुरु है, वह आठों पहर खुश है। उसकी ख़ुशी अलग तरह की है, और वह यह कहता है कि मेरे पास गुरु है। नाम का नशा आठों पहर रहता है। जिसे पूरा गुरु और नाम मिल गया है, उसे बहुत खुश होना चाहिए।

◆❖◆

जिसने भी नाम को ध्याया है, उसे सुख मिला है। हे सत्गुरु, जिसने भी आपके नाम को ध्याया है, उसे सब सुख मिल गए हैं। नाम के सिमरन के बिना मन को शांति नहीं मिलती है। शांति नाम ध्याने में है।
अंत में केवल नाम ही शांति देता है। नाम ही मुक्ति देता है। एक बार तन और मन ठहर जाते हैं तो अंदर गुरु के दर्शन हो जाते हैं।

◆❖◆

यह दुनिया कभी किसी की नहीं बनी है, और ना ही कभी किसी की बनेगी। कई युगों से मन दुनिया को अपना बनाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन कभी सफल नहीं हुआ। यदि मन गुरु को अपना बनाता है, तो उसे पूरा सुख मिलता है। इसके लिए हमें सिमरन करना होगा। चलो अभी से शुरू करते हैं। अंदर गुरु तक पहुंचना शिष्य का फर्ज है। रोज उसके अंदर दर्शन करें।

जप तप, रीति रिवाज और कर्मकांड

अंत में केवल नाम ही शांति देता है, सिर्फ नाम में मुक्ति है।

कोई भी बाहरी रीति-रिवाज कर सकता है, तीर्थों की यात्रा कर सकता है, तीर्थों पर नहा सकता है, तप और तपस्या कर सकता है। लेकिन इन सभी चीजों से किसी को शांति या मुक्ति नहीं मिली है, और ना ही मिल सकती है। मन को, हमारे अंदर जो बाणी धुनकारें मार रही है, सुनकर ही समझ आ सकती है।

◆❖◆

संत बाहर के रीति-रिवाज, तप, और तपस्या दुनिया को यह समझाने के लिए करते हैं, कि इन सब बाहरी साधनाओं से वह परमात्मा नहीं मिलता है।
अंत में केवल नाम ही शांति देता है, और सिर्फ नाम में ही मुक्ति है।

◆❖◆

यह उस परमात्मा की मर्जी है कि उसने माफ़ी देकर किसे भेजना है, और सिर्फ वही माफ़ी देने में सक्षम है।
सत्संग में आए बिना मन कभी भी नरम नहीं बनता।
शब्द-नाम के ध्यान के बिना मन साफ़ और पवित्र नहीं बन पाता। मन नरम नहीं होता और वह दूसरों को परेशान करता रहता है। उस रूहानी जोत के दर्शन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं।
सतगुरु के दर्शनों से पापों का नाश हो जाता है।

◆❖◆

एक बार तन और मन शांत हो कर ध्यान में जुड़ जाते हैं, तो अंदर उस परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं।
सतगुरु के अलावा कोई और नहीं जानता कि कैसे इस मन और आत्मा की गांठ को खोलना है।
आत्मा और मन दोनों अलग होकर अपने-अपने घर चले जाते हैं, और यह काम केवल एक पूरा सतगुरु ही कर सकता है।

नाम की कमाई क्या है?

संत सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "नाम जप बंदया, लाहा खट बंदया, बंदगी बिना होर सहारा ना"।

पहले जन्मों में हमने बंदगी करी, लेकिन गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला। अब सत्पुरुष, सतगुरु दयालु अजायब ने दया की, तो पता लगा कि गुरु का नाम जपना चाहिए।

आत्मा का पति परमात्मा है। अगर हमने कर्मकाण्ड किए हैं, तो झोंपड़ी से निकल कर महलों में चले जायेंगे, हाथ में से झाड़ू निकल जायेगा और हुकूमत की बागडोर मिल जाएगी।

"साधु जे सुख लैणे सारे, तो नाम जप सतगुरु दा।"

उस दयालु ने दया की और ना घर-बार छुड़वाया, ना कोई जात बदलवाई, ना कोई बोली बदलवाई, और ना पहरावा बदलवाया। ना कोई धर्म ही बदलना पड़ा। इस इंसान के जामें में ही मिल गया, और हमारे शरीर के अंदर ही हमें मिल गया।

कबीर साहब ने कहा, "ना हींग लगी ना फिटकड़ी"। नाम जपने में कोई पैसा नहीं लगता।

कबीर साहब कहते हैं, कि हमें कैसे रहना चाहिए? हमें ऐसे रहना चाहिए, जैसे पानी में जलमुरगई रहती है। वह पानी में रहती है, वहीं खान पान करती है, लेकिन जब उडारी मारती है तो सूखे परों के साथ उड़ जाती है।

कबीर साहब कहते हैं, मकड़ी मोह के साथ अपना जाल बनाती है और उस जाल में फंस कर आप ही मर जाती है। पतंगे का आग के साथ प्यार है। जहां आग देखता है, उसमें जाकर खत्म हो जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जो वी मन भेंट चढ़ौन्दा ऐ, ओह हाज़र रब्ब नूं पौंदा ऐ"।

गुरु नानक देव महाराज जी ने भी कहा है, कि अगर मुझे मिलने का चाव है तो शीश हथेली पर रख कर आओ।

कबीर साहब भी कहते हैं, "भक्ति मार्ग यों कहिये, ज्यों खंडे की धार। कामी क्रोधी लालची इनसे भगत ना होये, भक्ति करे कोई सूरमा, जात वर्ण कुल खोये"।

काम से आत्मा चढ़ाई नहीं कर पाती और गिर जाती है। सिमरन करके मन का हम ख्याल एकाग्र करते हैं, लेकिन जब क्रोध आता है, तो ख्याल फैल जाता है।

कबीर साहब कहते हैं कि लोभी आदमी भक्ति नहीं कर सकता।

महाराज जी कहते हैं, "रंग ते तमाशे कुछ दिनां लई रहणगे, कित्ते होए कर्मा दे दुःख सहने पैणगे।"

हुज़ूर महाराज जी कहते थे कि मुझे उस किरपाल का हुक्म था कि सब से मिल। सबसे मिलने के बाद पता चलता था कि एक फोड़े की तरह भरे हुए हैं, मतलब की हर आदमी दुःख से भरा है।

हमारे कर्म किये हुए हैं। पति और पत्नी दो हैं, लेकिन किसी का पति रूठा हुआ है, तो किसी की पत्नी रूठी हुई है। किसी का बेटा रूठा है, तो किसी का बाप रूठा हुआ है।

कोई बेरोजगारी से दुखी है। किसी के पास माया बहुत ज्यादा है, और उसे गोली के बिना नींद नहीं आती है। तड़फता है सारी रात, क्योंकि माया की राखी करनी पड़ती है। कोई परिवार से दुखी है, तो कोई बीमारी से दुखी है। सब दुखी हैं।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि ये कर्म हमारे मन के किये हुए हैं, तो हमें ही भुगतने पड़ते हैं।

किसी के यहां हमने जन्म लिया है, और किसी ने हमारे जन्म लिया है।

महाराज जी कहते हैं, "बुरे करमां दी सजा सोहण्यां, धक्के खांदा ऐ फिरदा, गुरु बिना कोई बात नहीं पुछदा, विछुड़ गयों कई चिर दा"।

मंदे कर्मों की वजह से किसी को हम दुःख देते हैं, और कोई हमें दुःख देता है। यह मंदे कर्मों की सजा ही है, प्यारयो।

गुरबाणी में आता है कि दुःख किसी को नहीं दीजिये, और इनके लिए किसी को दोष मत दो। दुःख जो है वह अपने कर्मों करके है। अगर दुःख दिया है, तो अपने आप ही आ जाता है। इसलिए ऐसा है प्यारयो, कि जो हमें किसी ने दुःख दिए हैं, तो वह भुगत लेने हैं, और आगे के लिए किसी को दुःख देना नहीं है।

कबीर साहब ने भी कहा है, "बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय, जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय"।

किसी की अगर निंदा या चुगली करते हैं, तो उसके पाप हमारे खाते में जुड़ जाते हैं, और हमारे पुण्य उसके खाते में चले जाते हैं। यही कुछ मिलता है निंदक को।

सावन सिंह जी महाराज ने अंधेर कोठड़ी में भजन-अभ्यास किया। उन्होंने सूखी रोटी खाकर सारी-सारी रात अभ्यास किया। हुजूर महाराज जी भी कहते थे कि प्यारयो, जिसने २०-३० साल अभ्यास किया है, और रात-दिन अभ्यास किया हुआ हो। आप उसके पास जाओ, उसके पास गुरु है।

कबीर साहब कहते हैं, "राम स्नेही संत हैं, संत स्नेही राम"।

भगत नाम का सन्देश देते हैं। उस सच्चे, पिता-परमात्मा का संदेश देते हैं, और उनका अपना कोई सन्देश नहीं होता है।

चौथी पातशाही गुरु राम दास जी कहते हैं, सब का परम-पिता, सब का राम, वह साझा राम है। उसका सन्देश भगत देते हैं।

"नाम तुम्हारा हिरदे वासे, सन्तन का संग पावो।"

नाम एक चाबी है। नाम की चाबी जिस किसी भी ताले को लगा देंगे तो वह खुल जायेगा। उस भगवान ने संतों को नाम की चाबी देकर भेजा है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि संत भवसागर के उस पार से आते हैं। उनके पास नाम की चाबी है। नाम का जहाज है।

नाम जहाज है, और जो पक्के मन से इस पर सवार हो जाते हैं, उनको संत इस भवसागर के पार सुरक्षित लंघा देते हैं। महाराज जी भी कहते हैं कि बिना बंदगी कोई चारा नहीं है।

दुनिया की आस दिल से ही निकाल देनी है। दुनिया क्या देगी? दुनिया कुछ भी नहीं देती है। अपने कर्मों का फैसला खुद ही हो जाता है। अपनी दसां-नोहां की, मेहनत की कमाई करी हुई ही इंसान को मिलती है। झूठ और लालच नहीं टिक पाते हैं।

भगतों ने सच को देखा होता है, शब्द को देखा होता है, नाम को देखा होता है, और गुरु को देखा होता है। इनको देख कर ही उनका संदेश देते हैं।

भगत के अंदर वह परमात्मा बैठ कर ही नाम देता है।

हमारे बस में कोई भी चीज नहीं है। सब कुछ नाम के बस है।

"जिसने नाम ध्याया है, उसने सर्व सुख पाया है।"

महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, हम उस परमात्मा को सच्चे मन से याद करें। हमारी सच्ची-सुच्ची तड़फ उस परमात्मा को मिलने के लिए हो।

अगर एक प्रेमी भजन करता है तो उसे देख कर दूसरा भी करता है।

फरीद साहब कहते हैं कि एक खरबूजे को देख कर दूजा रंग पकड़ जाता है।

फरीद साहब लिखते हैं, "काले मेंडे कपड़े, काला मेरा वेश, अवगुण भरया मैं फिरां, ते लोक आखण दरवेश"।

महाराज जी कहते हैं, "नाम जप बंदया, लाहा खट बंदया, बंदगी बिना होर सहारा ना, बिना बंदगी कोई चारा ना"।

प्यारयो, इस समय यह काम आसान है।

जो शरीर मिला है, यह ५०-१०० साल कराये का मकान है। लेकिन यह एक बार ही मिलता है। यह बार-बार ना तो किसी को मिला है और ना ही मिल सकता है।

रूहानियत का जो स्कूल है, वह आंखों से ऊपर है। आंखों से ऊपर वह परमात्मा बैठा है। स्कूल तक जाना सेवक का धर्म बनता है। जो प्यार के साथ बंदगी करते हैं, सिमरन करते हैं, उनको अनुभव हो जाता है।

स्वामी जी महाराज ने कहा है, "जो जो चोर भजन के प्राणी, सो सो दुःख सहें, आलस नींद सतावे उनको, लोभ नदी में डूब मरें"।

शुरू-शुरू में हमें यह मुश्किल लगता है। जो भजन करता है, उसके लिए यह आसान भी है।

हम ४-५ घंटे एक आसन पर बैठें, तो गुरु भी देखता है कि यह मेरी याद में बैठा हुआ है, और इस पर मैं कुछ दया करूं।

गुरु का सिख वह है जो तीन बजे अमृत-वेले उठे, और अमृतसर (अमृत के सरोवर) में नहाये।

संतों ने जो तीन बजे का मुहूर्त निकाला है। यह हमारा खाली समय होता है, और कोई खड़का भी नहीं होता। तीन बजे का मुहूर्त अच्छा है, इस समय उठें और सिमरन में समय लगायें। इस समय की हुई सिमरन की कमाई काफी बढ़ती फूलती है।

नाम सच्चा है, और अगर हमारा मन भी सच्चा है तो उसकी की हुई कमाई व्यर्थ नहीं जाएगी। उसका जरूर कुछ मिलेगा।

हे सतगुरु अजायब, तेरी आत्मा तड़फ रही है, दर्शन को प्रभु तरस रही है।

तूं करण-कारण प्रभु परमात्मा है, दया कर।

जल और थल में तेरा ही पसारा है।

प्यारयो, सच्चे मन से शब्द-नाम की कमाई करें।

आत्मा भवसागर कैसे पार करती है?

उस सत्पुरुष परमात्मा ने आत्मा के साथ वायदा किया था कि मैं इंसान के रुप में आऊंगा। जो आत्मा मुझे पुकारेगी उसे वापिस सुखों के देश, सचखंड ले जाऊंगा। जहां जन्म मरण नहीं है, और सर्व-सुख हैं।

इस जीव को अगर परमात्मा बख्शे तो ही बख्शा जा सकता है, और कोई इसको बख्शने वाला नहीं है।

सारे जीव आपो अपने कर्मों के हिसाब से दबे हुए हैं।

परम-पिता परमेश्वर कर्मों से आजाद है। उस पर कोई भी कर्म लागू नहीं है।

कर्म हमारे शरीर करके लागू है। जहां शरीर है, वहीं कर्म लागू हैं।

परम-पिता परमात्मा शब्द-रूप है, उसका ना कोई पाप है और ना कोई पुण्य है।

परमात्मा अगर बख्श ले तो उसकी मौज है। ना बख्शे तो जीव की क्या ताकत है, या रोब है? कोई रोब नहीं है। उसके आगे सिर्फ फ़रियाद है, बिनती है, अर्ज है।

परमात्मा के आगे बिनती है, और सच्ची-सुच्ची बिनती वह जरूर सुनता है।

वह कौन था? वह सतगुरु अजायब सिंह कुल-मालिक, परमात्मा था। तूं मेरा पिता है, मैं तेरा बालक हूँ। "बोढ़ पिता को लाज।" मेरी लाज तो आपके हाथ में है।

अगर तू मेरे कर्मों को देखे तो मैं पार हो ही नहीं सकता हूं।

तेरी कृपा ने ही पार उतारना है।

महाराज जी भी कहते हैं कि आत्मा तेरी है, और पुकारती है। तू बिनती सुन, अर्ज सुन। "मन करदा है मन मानी।"

आत्मा और मन की स्थूल गांठ लगी हुई है जो ऊपर जाकर खुलती है। सतगुरु इसे द्वैत भावना से एकता में लाता है। आत्मा का छुटकारा अगर होना है तो भजन से ही होना है, और कोई उपाय नहीं है।

गुरु तो दया करता है, और दया करके उसने नाम दे दिया है।

हमारी आत्मा जन्मों-जन्मों से कमजोर हो गयी है। जो हम भजन करते हैं, सतगुरु का दिया सिमरन करते हैं, वह आत्मा की खुराक है। भजन-सिमरन से आत्मा बलवान हो जाती है, और धुन-शब्द को सुनने के काबिल हो जाती है। इसे शब्द-धुन सुनाई देने लग जाता है।

हम गुरु का दिया हुआ सिमरन अगर प्यार से करेंगे, और मन को एकाग्र करेंगे, तो द्वैत भावना हट कर एकता आ जाएगी।

गुरु-भक्ति में रुकावट मन की है, और जब मन एकाग्र हो गया, तो रूकावट खत्म हो जाती है।

"गुरुमुख मन समझाई"। जब कोई गुरुमुख हो जाता है, तो अपने आपको समझाता है और अपने मन को विषयों से दूर हटाता है।

सतगुरु अजायब कहते हैं कि आत्मा पुकारती है, "लगी प्रीत ना तोड़यो, चरणी अपनी जोड़यो, सानूं बक्श दयो सच्ची बाणी"।

गुरु मन को साफ़ करता है, कुछ सिमरन के साथ और कुछ दर्शनों के साथ। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि संतों के अंदर जीता-जागता प्रभु-परमात्मा ज्योत स्वरुप होता है। जब प्रेमी उनके दर्शन करते हैं तो उनके कुछ पाप कट जाते हैं।

फरीद साहब कहते हैं, "उठ फरीदा सुत्या, तू झाड़ू दे मसीत, तू सुत्ता रब्ब जागदा, तेरी ढाढे नाल प्रीत"।

हमारा मन माया और मोह की मीठी नींद सोया हुआ है। इसने अगर जागना है तो शब्द के साथ जागना है, गुरु की दया के साथ जागना है।

"दया करी गुरुदेव मेरे ने, मोह का बंधन तोड़ दिया।"

महाराज जी भी कहते हैं कि तेरी आत्मा बिछड़ गयी थी, तानी जो टूट गयी थी तुमने उसे दोबारा गांठ मार दी है। तू धन हैं।

"धन-धन सतगुरु मेरा, जेहड़ा विछड़यां नूं मेलदा।"

यह तेरी कृपा है, तेरी दया है, तेरी मौज है, तेरी मेहर है कि तू बख्शता है। तू बख़शणहार है। तू बख्श।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी भी कहते हैं, "सतगुरु जी बख्श लयो, दर तेरे ते जिंद आयी निमाणी"। जब सतगुरु बख्शिश करता है और बख्श लेता है, फिर सेवक का कोई पाप नहीं रह जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "जे हो जाए तेरी मेहर दातया, दाणे भुज्जे होए कल्लर उगावें"। दाने अगर भुने हुए बीज दें, तो वे भी उग जायेंगे। बंजर जमीन में भी दाने उग जायेंगे, अगर तेरी मौज हो।

यह सत्संग परमात्मा का है, उस कुल मालिक, करण-कारण का है। परमात्मा जिसे चाहे उसे भेजता है।

महाराज जी भी कहते थे, प्यारयो जो आत्माएं संतों की होती हैं, बच्चे होते हैं, वे उन्हें ले जाने के लिए आते हैं। उनको बड़ा कुछ सत्संग में सुनाते हैं। उन्होंने सत्संग में जो सुना था, उससे क्या करना था? तैयारी वापिस जाने की करनी थी, पर वे संतों के विरोधी हो जाते हैं।

जब गुरु सेवक को नामदान की बख्शिश करता है तो उसके सारे पाप ले लेता है।

संत सेवकों के सिर्फ पाप लेने के लिए आते हैं। यहां से जीव को माफ़ी देकर ही ले जा सकते हैं। डाक्टर कोई भी दवाई दे दे, पर सेवक की बीमारी तो केवल सतगुरु ही दूर कर सकता है।

सतगुरु को जो भी मिलने आता है वह पापों की गठरी बांध कर लाता है, और कहता है कि मेरा यह काम हो, मेरा वह काम हो। वह पाप फिर उसको लेने पड़ते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, "संत न होते जगत में तो जल मरता संसार"।

प्यारयो, सेवक गुरु को कभी नहीं ढूंढ सकता है। यह तो गुरु की दया है, मेहर है अगर वह थोड़ा बहुत अनुभव दे दे या अपना पता दे दे, तो दे दे।

पाप

एक पूरे भक्त के दर्शन करने से पापों का नाश हो जाता है।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज ने पूरी दुनिया देखी, लेकिन उन्हें ऐसा कोई नहीं मिला जो पापों को मिटा सके। यह सब देख कर इस नतीजे पर पहुँचे कि केवल परमात्मा, और एक पूरा गुरु ही दूसरों के पापों को ले सकता है।

◆❖◆

वह परमात्मा संतों को संसार में भेजता है, क्योंकि वह जानता है कि संसार में बहुत सारे पाप किए जा रहे हैं। वह किसी ऐसे प्यारे को भेजता है जो आत्माओं और संसार दोनों को पापों से दूर कर सके।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि केवल गुरु ही हमारे पापों को ले सकता है। हमें उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।

"मेरा कागज़ गुनाहां वाला फाड़ दे, होर कुछ मंगदा नहीं।"

मन पापों से घबराया हुआ अगर सतगुरु के पास आता है और सच्चे दिल से माफ़ी मांगता है, तो यह पवित्र और साफ़-सुथरा हो जाता है। जब सतगुरु दया की बारिश करता है, तो पाप ख़त्म हो जाते हैं। केवल कुल-मालिक, करण-कारण परमात्मा ही हमारे मन के किये पापों के खाते को फाड़ सकता है। ऐसा करने की ताकत किसी और के पास नहीं है।

◆❖◆

जो दूसरों को धोखा देता है, वास्तव में वह उस सर्वशक्तिमान भगवान को धोखा दे रहा है, और पापों का भार इकट्ठा कर रहा है। गुरु का शब्द-रूप हमारे पापों को माफ नहीं करता और दंड देता है। सतगुरु इस स्थूल मंडल पर सेवकों के सभी पापों की जिम्मेदारी लेता है और वह माफ़ी भी देता है।

◆❖◆

बुल्लेशाह का कहना है कि हमारे कर्मों पर फैसला लिया जाएगा।
क्या हमने सत्संग सुना और उस पर अमल किया है?

◆❖◆

"तुसीं अरज सुनो किरपाल गुरु, साडा मन बदियाँ तो मोड़ दयो।"

नाम, गुरु, और सत्संग के बिना मन को पापों और बुरे कर्मों से दूर नहीं किया जा सकता। एक बार जब पूरा गुरु मिल जाता है तो मन को बुरे कर्मों से मोड़ना आसान हो जाता है।

◆❖◆

यदि कोई किसी की आलोचना, निंदा, या बुराई करता है, तो वह पापों को इकट्ठा कर रहा है।

कबीर साहब कहते हैं कि अगर कोई तारीफ करना चाहता है तो अपने गुरु की तारीफ करे। अगर कोई निंदा करना चाहता है तो अपने मन की निंदा करे।

◆❖◆

नूरी प्रकाश के दर्शन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। एक पूरे भक्त के दर्शन करके पापों का नाश हो जाता है।

हमने कई जन्म लिए और हर जन्म में कितने ही पाप किए। हमने पापों का भारी भार इकट्ठा किया है। सतगुरु पापों को ख़त्म करने में हमारी मदद करते हैं।

◆❖◆

सेवक अरदास करता है कि मैंने कोई अच्छा करम नहीं किया है, लेकिन आप कृपया मेरी इज्जत बनाए रखें। कृपया अपना वादा पूरा करें।

मैं एक नीच हूं, मेरा गुरु बहुत ऊँचा है, मेरा गुरु महान है। वह नीच लोगों के साथ संबंध बनाए रखता है, और मेरा ख्याल रखता है। कृपया सेवक की फ़रियाद को सुनें, क्योंकि सेवक केवल प्रार्थना ही कर सकता है।

कर्म क्या हैं और आत्मा इनके जाल से कैसे मुक्त होती है?

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "चढ़े चेत हर चेत प्राणी, बिन सिमरन पछतावेंगा।"

महाराज जी चेतावनी देते हैं कि ना तो कोई गुरु मिला, ना कोई सत्संग मिला, ना नाम मिला, और ना ही हम सत्संग में गए, तो हम कहां जायेंगे? हम कर्मों के जाल में फंसे हुए हैं।

उस दयालु ने दया की और अपना नाम दिया। अपना सिमरन दे के अपने में मिलाया और अपने जैसा बनाया।

कबीर साहब कहते हैं, "कीट क्या जाने भृंग को, गुरु कर ले आप समान"।

गुरु परमात्मा है। गुरु तो गुरु ही बनाना चाहता है। परमात्मा कुल मालिक, करण-कारण है। जब वह दया करता है, तो खुद मानस-जामा धार कर इस संसार में आता है।

उस दयालु को दया आई, तो उसने अपना नामदान दे के अपने में मिला लिया। उस दयालु ने दया की वरना हम तो इस भवसागर में बहते जा रहे थे।

अगर सतगुरु अजायब सिंह दया नहीं करते, तो पता नहीं अपना जन्म घास-फूस, पशु, पक्षी या किसी और जून में हो जाना था।

उसने ना तो हमारी बोली बदलवाई और ना ही पहनावा बदलवाया। सतगुरु ने कहा कि अपनी बोली बोलो, अपना पहनावा पहनो, अपने-अपने धर्म और जात में रहो, यह जो शिक्षा मैं दे रहा हूँ, यह तो शब्द-नाम की है। यह शरीर से अलग है, और अपना शरीर भी रखो।

गुरु के बिना नामदान नहीं मिलता, और मुक्ति नाम में है।

इंसान से नीचे की जूनियों पर अगर हम विचार करें, जैसे ऊंट है, उस पर भार लादा हुआ है, और वह तंग है। तांगे में घोड़ा जोड़ा हुआ है, तांगे में सवारी बहुत बैठी हैं और उसको चलाने वाला चाबुक मारता है, गिर कर भी उस बोझ को उठाता है, वह कितना दुखी है। इसी तरह बैल है, किसान जमींदार उसे पूरा दिन खेतों में इस्तेमाल करता है, और अगर वह गिर जाये, तो लोहे की तीखी कील वाले डंडे से उसको मार कर खड़ा कर लेता है, वह भी बेचारा बहुत दुखी है।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, "नानक दुखिया सब संसार"।

जहां मन माया का राज है, प्यारयो, वहां कहां सुख है। जहां भगवान है, सुख वहां है।

गुरबाणी कहती है, सारी दुनिया दुखी है, लेकिन जो नाम के साथ लग जाता है, वह सुखी हो जाता है। या तो वह परमात्मा सुखी है, और या वह जो उसका नाम जपता है।

कबीर साहब कहते हैं, कि अगर हम दुनिया का सिमरन करते हैं, तो दुखी हैं। यदि हम उस परमात्मा का सिमरन करते हैं, तो हमें सारे सुख मिल जाते हैं।

विचार करने योग्य बात है, कि एक सिमरन में दुःख है, और दूसरे में सुख है।

गुरु का या परमात्मा का अगर हम सिमरन करते हैं, तो कर्म जाल से मुक्त हो जाते हैं, यह काटे जाते हैं। सदा के लिए हमें अमर सुख मिल जाता है।

अगर संसार का सिमरन करेंगे तो दुखों को बुलावा देंगे, चौरासी में चले जायेंगे, जन्म-मरण में चले जायेंगे।

महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, चाहे अपनी उम्र एक हजार साल हो जाये, या एक लाख साल हो जाए, या इससे भी ज्यादा हो जाये, मगर हम कर्मों के जाल से बच नहीं सकते हैं। अगर मालिक दया करके अपने सत्संग में बुलाए और अपने निज-धाम का भेद बताये, सचखंड का राह बताये, तब पता चलता है कि हम बहे जा रहे हैं। सचखंड अगम देश है, सुखों का देश है। वहां दुःख क्लेश नहीं हैं।

काल हमें भटका देता है।

प्यारयो, सब के अंदर एक ही भगवान है। काल के भटकाए जब हम एक दूसरे को मंदा बोलते हैं, भला बुरा बोलते हैं, तो वह भगवान को ही कह रहे होते हैं।

सत्संग में आ कर ही हमें अपने मन की गलतियों का पता लगता है। यह मन हम से पहले गलती करवा देता है, और फिर हमें कह भी देता है, कि मैंने यह गलती तुम से करवायी है।

हम इस इंसानी जीवन पर विचार करें - कोई बीमारी करके दुखी है, कोई बेरोजगारी करके दुखी है, किसी को कर्जा लेने का दुःख है और किसी को कर्जा देने का दुःख है। किसी की पत्नी रूठ जाती है तो दुख है। किसी का पति नाराज है तो वह दुखी है।

सतगुरु अजायब सिंह जी कहते थे कि मैंने सारे संसार को अच्छी तरह से देखा है, सब एक फोड़े की तरह भरे हुए हैं, और दुखी हैं।

नाम के सहारे ही हम कष्टों को सह सकते हैं।

गुरु भक्ति तो भरोसे पर है।

यह जीवन तो कर्मों का खेत है। आज जो हमें मिला हुआ है वह हमें अपना किया हुआ ही मिला है। हमारे मन का किया हुआ ही मिला है।

यदि दुख बुरे कर्मों के कारण होता है, तो क्यों ना ऐसा सोच कर विचार बना लें कि कोई मंदा कर्म ही नहीं करना है।

एक सत्संगी इस जीवन के बारे में विचार करता है कि मन का किया हुआ कर्म ही मुझे मिला हुआ है।

गुरबाणी में भी ऐसा आता है, "दुख में सुख मनावें"।

हमारे मन के किये हुए कर्म प्रालब्ध बन गए हैं, और हमें ये भुगतने पड़ेंगे।

कर्मकांड में दुःख है।

कर्म तीन प्रकार के होते हैं: क्रियमान, प्रालब्ध, और संचित।

सतगुरु जब नाम देता है तो उस समय सभी संचित और क्रियमान कर्मों को खत्म कर देता है। केवल प्रालब्ध कर्म ही रह जाते हैं। उस में से भी खास ख़ास ही भुगतने पड़ते हैं। अगर १०० किलो का वजन है, तो गुरु उसमें से दो किलो ही उठवाता है, कि इतने तो तू भुगत ले।

हमारा शरीर प्रालब्ध करके है। अगर प्रालब्ध कर्म गुरु खत्म कर दे, तो हमें यह शरीर उसी समय छोड़ना पड़ जाए। इसलिए, शरीर करके हमें थोड़े-बहुत प्रालब्ध कर्म भोगने पड़ते हैं।

महाराज जी भी कहते हैं, "नाम भुलावें, बहु दुःख पावें, पुठी खल लहावेंगा"।

सतगुरु अजायब सिंह कुल मालिक है, बख्शने वाला है। तू दाता है, हम भिखारी हैं। तू बख्शने वाला दीन-दयाल है। अगर तू मेरे कर्मों का लेखा-जोखा करे तो मैं माफ़ी का हकदार ही नहीं। तू दयालु है, दया कर और कर्म ना देख।

जब नामदान सतगुरु देता है तो उस समय जीव बख्शा जाता है।

हमारी भूलें माफ कर दे। हम भूल कर गलत रास्ते पर चले गए हैं। तू कृपालु है कृपा कर, मेहर कर।

"तेरी आत्मा तड़फ रही है, दर्शन को प्रभु तरस रही है।"

महाराज जी कहते हैं, "ऐ मन पापी ओगुण हारे को, तू मोड़ कदों घर लयावेंगा"।

यह मन पापी है, इसे मोड़ कर कब घर लेकर आएगा?

यह तो जो गुरु वाले हैं, उन्हीं को पता लगता है कि मन हमसे कितने पाप करवाता है।

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि सत्संग में बैठा हुआ भी यह सोचता रहता है, किसी की निंदा या चुगली करता रहता है।

अगर हम कोई गलती करते हैं तो हमें सतगुरु से प्रार्थना करनी चाहिए। सतगुरु दयालु है, और वह हमें माफ कर सकते हैं।

हे सतगुरु मैं एक निमाणी आत्मा हूं, कृपया मुझे माफ कर दो।

अगर हम अपनी गलती मानते हैं, और इसके लिए पश्चाताप करते हैं, तो सतगुरु हमें इसका इनाम देता है।

कबीर साहब ने कहा है, "तेर मेर की यह जेवड़ी, बट बांटया संसार"।

तेरी-मेरी की रस्सी के साथ संसार को बांध दिया है।

कबीर साहब ने कहा है कि बकरा मैं-मैं करता है तो छुरी तैयार हो जाती है।

यह जो संसार है, यह ना तेरी है और ना मेरी। यह सारी संसार तो उस परमात्मा की है।

सतगुरु संत अजायब सिंह महाराज जी के दरबार में माफ़ी है।

महाराज जी भी कहते थे कि काल देश में क़ानून है। अगर किसी ने अपराध किया है तो वह सजा भुगतता है।

संत यहां माफ़ी देकर आत्मा को सचखंड ले जाते हैं। माफ़ी के बिना लेकर नहीं जा सकते हैं।

महाराज जी भी कहते हैं, "चढ़े चेत हर चेत प्राणी, बिन सिमरन पछतायेगा"।

मन के पाप किए हुए हैं। इसको मौका मिला है गुरु भक्ति करने का, और अपने पाप माफ करवाने का।

गुरु नाम शब्द है, वह इसे बख्श देता है।

यह सतगुरु अजायब सिंह की मौज है। सतगुरु अजायब आया है।

उस परमात्मा की इच्छा में सतगुरु अजायब आए।

"बख्शो बख़शणहार पिया जी, बख्शो दीन दयाल पिया।"

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज ने लिखा है, "कोई ना किसे दा बेली, दुनिया मतलब दी"।

कबीर साहब का कहना है, "घर की त्रिया संग लागि रहे, जब हंस तजि काया, प्रेत-प्रेत कर भागी रे"।

हमारे पीछे किये कर्म ही हैं जो हमारे दुखों का कारण बनते हैं। यह हमारे पिछले बुरे कर्मों करके है।

जब कोई बूढ़ा आदमी मर जाता है तब यह आशा या उम्मीद नहीं रहती है कि अब हमें कुछ देगा।

सारी दुनिया को संत-सतगुरु ने देखा होता है, कि यह अपने मतलब की है।

हमारे मन का प्यार दुनिया से लगा हुआ है। अब दुनिया में से प्यार निकाल कर उस परमात्मा के साथ लगाना है।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते हैं, "झूठी दुनिया च फसया दिल मेरा, कोई आ के बंधन तोड़ गया, लख वारी ओ जी सदके, जेड़ा सुरत शब्द नू जोड़ गया"।

यहां इस दुनिया में हम सब मोह-माया में फंसे हुए हैं। अगर हमें कोई ऐसा संत महात्मा मिल जाए, या भगत मिल जाए, जो हमें उस परमात्मा के साथ जोड़ दे, या उससे मिलवा दे, या अपने घर सचखंड ले जाए, तो उसका शुक्र है, शुक्र है।

हमारा मन अपने घर को भूल गया है। मन अपना खान पान भी भूल गया है। अगर हमें कोई ऐसा महात्मा मिल जाए, जो हमारे मन को उसके घर तक पहुंच दे, तो हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए। जब मन अपने घर ब्रह्म में था, तो यह शांत था।

नौ द्वारों से निकल कर मन बाहरमुखी हो गया है और भटक रहा है। आंख, कान, जीभ, नाक, और नीचे दो इन्द्रियों के सुराख हैं, जो बाहर की तरफ खुलते हैं।

मन अपने घर से बाहर भूल गया है, तो जो भी चोर है, इसे पकड़ लेता है। कभी काम पकड़ लेता है, कभी क्रोध, और इसे तबाह कर देते हैं।

मन के अंदर कल्पनाएं उठती हैं। हर चीज के लिए कलपता है। यह कल्पना शांत तब होती है जब कोई पूरा गुरु शब्द भेदी मिल जाए, और नाम शब्द का दान दे दे। इसके बाद मन नाम की कमाई करे, और यह चोर घर से बाहर निकल जाएं, तब जाकर मन के अंदर शांति आएगी। यह शांत हो जायेगा।

ये चोर हर जीव को ख़त्म कर देते हैं। ऐसा देख कर ही सतगुरु दयाल होता है। जब जीव को चोरों ने पकड़ा होता है, उस समय इसका कोई हमदर्द आ जाये, गुरु आ जाए और इसे छुड़ा दे, तो हम गुरु का शुक्राना करें।

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज का कहना है कि हम अकेले हैं और शादी की इच्छा रखते हैं, कि हमें पत्नी मिल जाये, और पत्नी मिल भी जाती है। लड़की कहती है मुझे पति मिल जाये, और उसे मिल जाता है। शादी के बाद बच्चा हो जाता है, और अगर वह कहे-कार नहीं है, कहना नहीं मानता है, तो हमने अपना दुःख खुद बना लिया है।

जीव परमात्मा को कब भूल जाता है?

सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज कहते थे कि प्यारयो, जब कोई बूढ़ा बुजुर्ग मर जाता है तो उस समय जीव परमात्मा को भूल जाता है। हमें अगर ख़ुशी प्राप्त होती है, तो उस समय हम परमात्मा को भूल जाते हैं। जैसे बच्चे का जन्म होता है, या शादी होती है, उस समय हम परमात्मा को भूल जाते हैं।

महाराज जी कहते हैं, जीव जवान हो जाता है, और इसे परमात्मा याद नहीं रहता है। "मुछां फुटियां रंग दमक मारी, मारे विच असमान उडारी।"

कबीर साहब कहते हैं, "चार पहर खाये और चार पहर सोये"।

सतगुरु अजायब सिंह जी का कहना है, "अपणा घर हुण होया बेगाना"।

अपना शरीर एक किराए का मकान है। इस कराये के मकान को जब खाली करवा लेना है तो अपना क्या है? अपना कुछ भी नहीं है।

"नाम ध्यायेंगा, ते सदा सुख फल पायेंगा।"

नाम अमर है, मरता नहीं है। नाम के साथ लग कर ही हम अमर होंगे।

राम नाम ही सच है, बाकी सारा झूठ है।

झूठ वह है जिसने सदा रहना नहीं है, फनाह हो जाना है। जिसने खत्म ही हो जाना है, तो फिर इसके साथ प्यार लगा कर कोई कहां जायेगा? जहां मोह है, प्यार है, वहां ही जीव जन्मेगा, मरेगा।

कबीर साहब कहते हैं कि राम-राम कहने से राम नहीं मिलता है। वहां जाकर राम को मिलना है जहां वह राम है। पानी-पानी कहने से कौन सा प्यास बुझती है? पानी पीने से ही प्यास बुझती है। अगर हम रोटी-रोटी कहें, तो कौन सा भूख मिटती है? रोटी को खाने से ही भूख मिटती है।

राम हमारे घट में बैठा हुआ है। हमारी दो आंखों से ऊपर, अंदर गुप्त रूप में है। वह अंदर भी है और बाहर भी। उसने अपने मिलने का रास्ता अंदर खुद बनाया है, और अंदर ही मिलेगा।

अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं कि प्यारयो, हमारे शरीर के अंदर उसने रास्ता बनाया है। छः फुट की पक्की सड़क है, और उस सड़क पर हम अगर चलें तो वह खुद अपना दरवाजा खोल देगा।

हमारा प्यार दुनिया में लगा हुआ है, तो हम दुनिया में आ रहे हैं। दुनिया में से प्यार निकाल कर अगर हम परमात्मा के साथ प्यार लगा दें, तो वह दरवाजा खोल देता है।

महाराज जी भी कहते हैं कि जब घर में मान-बड़याई हो जाती है, तो मालिक याद ही नहीं रहता है।

माँ के पेट में वायदा करके आया था कि मुझे बाहर निकाल, मैं तेरा गुणगान करूँगा, तेरा भजन सिमरन करूंगा।

महाराज जी भी कहते हैं, "बंदा नाम जपने नूं आया, माया ने जंजाल पा लया"।

महाराज जी भी कहते हैं कि माया खाई, माया पी, और माया में ही रहे, तो सपना किसका आएगा? माया का ही आएगा।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "कर ठगियाँ घर नूं लयावें, धियां पुत्रां नूं आन खवावें, तैथों पुछना हिसाब, किवें देवेंगे जवाब, तेरी कदर ना पैनी ढेली, दुनिया मतलब दी"।

बूढ़ों के लिए वृद्धाश्रम बन गए हैं। परिवार कहता है कि बूढ़ों को वृद्धाश्रम छोड़ आओ, अब यह काम के नहीं रहे हैं।

ना कभी सत्संग सुना, और ना ही किसी संत महात्मा के पास गए। विचार भी कभी नहीं बदला, नाम भी नहीं लिया, तो कैसे बचाव होगा?

महाराज जी ने भी इस बात पर बहुत जोर दिया कि बूढ़ों को वृद्धाश्रम मत छोड़ कर आओ। जो बेटे बेटियां हैं, वे उन्हें संभालें और सेवा करें।

जब कोई बूढ़ा हो जाता है तो कौन संभाल करता है? "दुनिया मतलब दी।"

अगर जवानी में नाम मिल जाता है तो नाम जपना आसान होता है। अब बूढ़े हो गए हैं। अगर पहले नाम नहीं मिला और अब नाम मिल भी जाए, तो कौन सा नाम जपा जाएगा।

नाम जब किसी बूढ़े को या जवान को मिल जाता है तो वह गुरु के घर में जन्म ले लेता है।

वैसे तो जब कोई जीव सत्संग में आ जाता है तो उसकी संभाल होती है। गुरु उसे या तो नाम दान देता है, या अच्छे घर में जन्म देकर सतगुरु उसे नाम दान देगा।

सत्संग में आया जीव आशा लेकर आता है और वह खाली नहीं जाता है। कुछ ना कुछ उसे मिलता है। परमात्मा सत्संग में आने का इनाम जरूर देता है।

सत्संग उस परमात्मा की है, सत्पुरुष की है। वाहेगुरु, अकाल-पुरख की संगत है, जिसे काल नहीं खाता।

सत्संग परमात्मा की तरफ से होता है। भगत परमात्मा के बेटे होते हैं। उनसे जैसा परमात्मा बुलवाता है, वैसा बोल देते हैं। वे अपनी तरफ से या अपनी मान बड़ाई के लिए नहीं करते हैं। सिर्फ परमात्मा की बड़ाई करते हैं।

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "दुनिया दे दुखड़े सिर ते उठावे, विछड़या मालिक फेर मिलावे"।

जब सतगुरु नाम दान की जीव को बक्शिश करते हैं तो उसके पाप ले लेते हैं।

जीव के पाप लेकर ही उसे मालिक के दरबार में भेजते हैं।

कर्म

जो कर्म किये हैं उनका भुगतान करना पड़ेगा।

काल के देश का यह क़ानून है कि हर कर्म की सजा भुगतनी पड़ती है। लेकिन दयाल के देश में माफ़ी है, और वह यहां से हमें माफ़ी दे कर ही अपने घर सचखंड ले जाता है।
यदि कोई पूरे गुरु के पास जाता है और उनके बताये तरीके पर जीवन को ढालता है, तो उसके दुख दूर हो जाते हैं, और जीवन अच्छा बन जाता है।
गुरु की शिक्षा के अनुसार जीवन जीकर ही हम जीवन अच्छा बना सकते हैं।
"अड़ी छड्ड अड़या, रस्ते लग अड़या, किते मिल जाए दंड करारा ना।"

◆❖◆

जब हम पर मुसीबत आती है तो हम परेशान हो जाते हैं, और चिंता करते हैं। जब हमें कष्ट होता है तो हमें नहीं पता कि क्या करना है। यह सच्च है कि उस परमात्मा के अलावा कोई और आकर हमारी मदद नहीं करता।
यदि मन पाप और बुरे काम करता है, तो निश्चित रूप से हमें उनका फल तो भुगतना पड़ेगा। हमें अपनी आत्मा को समझाना होगा कि अब हमें यह तो सहन करना ही पड़ेगा।

◆❖◆

अगर हम उसके आगे बिनती करते हैं, तो शायद वह हमारी बिनती को सुन ले।
कबीर साहब कहते हैं कि जब कोई दुख भोगता है, तो फिर उस समय वह भगवान को याद करता है।
प्यारयो, जब हमें कठिनाई या पीड़ा आती है तो हम दूसरों को दोषी ठहराते हैं, और उनकी गलती निकालते हैं।
हम यह भूल जाते हैं कि जो भी हो रहा है वह हमारे कर्मों के अनुसार, और उस परमात्मा की मर्जी से हो रहा है।

◆❖◆

चाहे कितने भी हमारे बुरे कर्म हैं, यदि हम सत्संग में आने लगें, तो अच्छे कर्म बनने लग जाते हैं।
यह सतगुरु ही है जो हमें साफ करता है।
हम 'मैं और मेरी' की वजह से कर्मों में फंस जाते हैं।
जब कोई यह सोचता है, "मैं कर्ता हूं, मैं यह कर सकता हूं या यह काम मैंने किया है", तो वह फंस जाता है, और उसे इसका भुगतान करना पड़ता है।
यदि हम सोचते हैं, "जित्थे भेजे दाता जावां, तेरा दित्ता सदा ही खावां, मैं हां पुतली तेरे हत्थ डोर दातया"। तो कर्मों से प्रभावित नहीं होते हैं।
जो भी संतों के सत्संग में आता है, वह सभी सुखों का भागी हो जाता है।

◆❖◆

हम तीन प्रकार से कर्म करते हैं- मन, कथनी और करनी से।
कबीर साहब यह भी कहते हैं कि अगर आप अपने मन पर नियंत्रण नहीं रख सकते और बुरे कर्मों की ओर चले जाते हैं, तो कम से कम अपने शरीर से बुरे कर्म ना करें। शरीर द्वारा किया हुआ कर्म माफ़ नहीं होता।

◆❖◆

यह काल का देश है। काल के देश में मन जैसे कर्म करेगा उसका वैसा फल हमें मिलेगा। इसलिए हमें नेह-कर्म होना है, कर्मों से रहित होना है।

अगर हमारी सोच है कि जहां भेज देता है मैं चला जाता हूं। जो दे देता है, मैं खा लेता हूं, तो हमारा कोई कर्म नहीं है।

हमारा मन खुद कर्म करता है, फिर भुगतान करता है। हौमें रोग में दुःख पाता है।

यदि कोई अपने आप को बुरे कर्म करने से नहीं रोकता है तो वह परमात्मा उसे क्या इनाम देगा?

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि मुस्लिम का जब रोज़ा रखने का दौर चलता है, तो वह पूरे दिन खाना नहीं खाते। लेकिन शाम को वे गाय को काटकर खाते हैं। वह परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को क्या इनाम देगा जो जानवरों को काटता है और उन्हें खाता है? इस नाटक को देखकर कबीर साहब ने कहा है, हे प्यारे, आपने अपनी थाली को श्मशान भूमि बना दिया है। मृत शरीर आपकी थाली में होता है, इसलिए जब कोई उस मांसाहारी खाने को खाता है तो वह थाली एक तरह से श्मशान ही है।

मन, इंद्रियां, और पांच ठग

कबीर साहब कहते हैं कि संत अपने मन को समझाते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, "गुरु कहे सो ही करिए, मन के मते कभी ना चलिए"।
जो मन का कहना मानता है, वह चौरासी के जन्म-मरण के चक्कर में चला जाता है।

◆❖◆

मन अंदर जाकर उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से मिलना नहीं चाहता है। मन उसे बाहर खोज रहा है। गुरु, नाम, और सत्संग के बिना परमात्मा नहीं मिलता।

◆❖◆

मन एक हिरण की तरह बाहर घूम रहा है। एक हिरण कभी भी एक जगह पर नहीं रह सकता, वैसे ही यह मन कभी भी स्थिर नहीं रहता।

एक बार जब हमें गुरु मिल गया है, नाम मिल गया है, सत्संग मिल गया है, तो यह हमारा फर्ज है कि हम मन को शांत करें, और अपने असली घर वापस जाएं।

यह उतना मुश्किल नहीं है जितना हम सोचते हैं।

◆❖◆

सिमरन-ध्यान प्रेम और विश्वास के साथ करना होता है। हम सिमरन करते हैं तो हमें अपनी आत्मा के लिए अमृत मिलता है। लेकिन पांच दुश्मन या चोर (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार) उस अमृत को पीते जाते हैं, और हम सूखे रह जाते हैं। जब हम सोते हैं तो ये चोर आते हैं और हमें लूटते हैं। मन की इन पांच चोरों से दोस्ती है। मन सोचता है कि यह उन्हें भोग रहा है, लेकिन सच यह है कि ये इन्द्रियां मन को भोग लेती हैं।

◆❖◆

मन ब्रह्म का अंश है, इसलिए उसे हमने उसके घर पहुंचाना है। ब्रह्म मन का घर है, और एक बार अपने घर में पहुंच जाए तो हमें इससे कोई डर नहीं। हमारे दिलों में सर्वशक्तिमान परमेश्वर से मिलने की इच्छा तो है, लेकिन हम उसे तभी पूरा कर सकते हैं जब हम उसके द्वारा बनाई गई विधि का इस्तेमाल करते हैं, और कड़ी मेहनत करते हैं।

◆❖◆

हमारे जीवन में बहुत कम सांसें हैं, हमें नहीं पता कि ये कब खत्म हो जाएंगी। अगर हम अपने काम को टालते रहें तो यह कभी पूरा नहीं होगा। मन हमें कभी सिमरन करने के लिए नहीं कहता। वह हमेशा हमारे साथ है, हमें परेशान या विचलित करने के लिए। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जो कल करना है उसे आज ही कर लो। यह आपका अपना निजी काम है, इसे पूरा करना चाहिए।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि हे मन, वैसे कर जैसा मैं कहता हूं। इस संसार में जीवन छोटा है, और बाद में आपको इस मन पर काबू करने का मौका फिर नहीं मिलेगा।

केवल नाम ही मन पर काबू पा सकता है। ना बाहरी साधन और ना ही चतुराई ऐसा कर सकते हैं।

अगर किसी सांप को पकड़कर पिटारी में डाल दिया जाए तो जहर वैसे का वैसा ही रहता है। वह ख़त्म नहीं हो जाता। केवल जहर वाली थैली को हटाकर ही सांप पर काबू पाया जा सकता है, फिर कोई भी इसे किसी भी तरह से हाथ लगा सकता है।

◆❖◆

मन संसार के प्यार और मोह में फंसा हुआ है। मन को कैसे काबू करें? नाम, शब्द, गुरु और सत्संग के साथ। अभी मन संसार के सुखों से प्यार करता है। अगर इससे अच्छे स्वाद वाली कोई चीज इसको दे दी जाए तो यह दुनिया के स्वादों को छोड़ देगा।

◆❖◆

पहला काम मन को इसके घर ब्रह्म या त्रिकुटी तक पहुंचाना है। एक बार अपने घर पहुंचने के बाद यह संसार के स्वादों को छोड़ देगा। इसे पीने के लिए नाम का अमृत मिलेगा जो इसकी प्यास को हमेशा के लिए बुझा देगा। इसे हमेशा के लिए शांति मिल जाएगी। हमें अमर सुख मिले जाएगा।

◆❖◆

यदि कोई मन को उसके घर पहुंचाने के लिए कड़ी मेहनत या उपाय नहीं करता है, बल्कि चतुराई और बुद्धि पर निर्भर करता है, तो कभी सफल नहीं हो सकता है।

हमारा मन दुनिया से जुड़ा हुआ है।

जो सयाने प्रेमी होते हैं वे मन को कभी भी भ्रम पैदा नहीं करने देते, और ना ही उन्हें डर लगता है। मन को उन्हें धोखा देने का कोई अवसर नहीं मिलता। वे अपने मन को बुरे कर्म नहीं करने देते। संत मन को काबू करने का तरीका जानते हैं। वे ही हैं जिनके पास यह भेद होता है। संत मन से काम करवाते हैं। उनके हाथ काम पर और मन सिमरन में जुड़ा होता है।

◆❖◆

मन आत्मा से ताकत लेता है। यदि कोई सच्चे गुरु से मिलता है, और सुरत-शब्द योग का अभ्यास करता है, फिर उस परमात्मा को मिलना आसान हो जाता है।

रोज नित-नेम से भजन सिमरन करना है, तभी सारे कष्ट समाप्त होते हैं।

मन को पता है कि यह व्यक्ति शब्द नाम का ध्यान कर रहा है, सिमरन कर रहा है। अगर मैं ऐसे व्यक्ति को परेशान करता हूं, तो मुझे ही परेशानी उठानी पड़ेगी।

◆❖◆

गुरु के अलावा कोई और नहीं जानता कि कैसे इस आत्मा और मन के बीच की स्थूल गाँठ को खोलना है। यह केवल सतगुरु की कृपा से ही खुलती है।

◆❖◆

मन एक शीशे की तरह है। किसी को अगर अपना शरीर देखना है तो वह आईने के सामने खड़े हो जाते हैं। एक बार जब मन साफ़ हो जाता है तो हम उस परमेश्वर को अपने भीतर देख सकते हैं।

"तूं सुख वेले शुक्राना कर, ते दुःख वेले अरदास"।

अच्छे समय में उसका आभार समझें। जिसकी वजह से सुख मिले हैं, उसका धन्यवाद करें।

यदि समय कठिन है और हम उससे प्रार्थना करते हैं, तो वह निश्चित रूप से हमारी बात सुनता है। दुख या कठिनाई के समय जीव सोचता है कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हो रहा है। हम यह नहीं समझते कि यह हमारा अपना मन है जो हमारे सभी कष्टों का कारण बनता है।

◆❖◆

कबीर साहब कहते हैं कि संत अपने मन को समझाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि मन की दो समस्याएं हैं और दोनों ही तरीकों से यह जीव को परेशान करता है। यदि आप मन के साथ हठ करते हैं, तो यह वापस आप पर हमला करेगा। यदि आप मन से नरमी करते हैं, तो यह आपके लिए और कठिनाइयां पैदा करेगा।

◆❖◆

हमारी समस्या यह है कि मन बाहर चला जाता है। मन की वजह से ही शरीर में दर्द महसूस होता है। ऐसा तब होता है जब मन बाहर चला जाता है।

कबीर साहब कहते हैं, "मुसाफिर जागते रहना, नगर में चोर आते हैं "।

◆❖◆

संत हमें बताते हैं कि एक सांस जितना भी मन पर विश्वास नहीं करें। हर सांस के साथ, हर समय, सिमरन जारी रखें । संत जानते हैं मन हमें धोखा दे सकता है, इसीलिए हर सांस के साथ सिमरन करते हैं। मन की वजह से ही भाई-भाई लड़ते हैं, बहन से बहन लड़ती है, बेटा पिता से लड़ता है, और बेटी मां से लड़ती है। मन की वजह से रिश्तेदार लड़ते हैं, पड़ोसी लड़ते हैं, राज्य और देश तक लड़ पड़ते हैं। यह सब मन का बनाया हुआ खेल है। सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, प्रेमी इस बात को समझें - एक-दूसरे को माफी दो और माफी मांगो ताकि प्यार बना रहे। अगर हम दूसरों को माफ नहीं करेंगे तो वह परमात्मा हमें कैसे माफ कर देगा?

◆❖◆

मन को गुरु की शरण में लगाना है। अगर कोई रूकावट है तो वह हमारे मन की है।

जितना समय आज हम उसकी याद में बिता रहे हैं, क्या उससे हमारा मन टिक गया है? क्या हमारा मन एकाग्र हो गया है? क्या मन अपने घर बैठ गया है? ठंडे दिमाग से सोचना है। मन को उसके घर पहुँचाने के लिए कुछ समय भी चाहिए। एक दिन में भगत नहीं बनता है।

◆❖◆

संत अजायब सिंह महाराज जी ने कहा है कि एक इंसान जो कुछ भी कर रहा है, वह अपने मन के कहे करता है। फिर हम बहाना बनाते हैं कि किसी और ने ऐसा किया है, और हम दूसरों को दोष देते हैं।

◆❖◆

मन की बाधा केवल ब्रह्म तक है। इससे आगे नहीं। अगर हम प्यार से सिमरन करते हैं तो अपने अंदर उस प्रकाश को देख लेते हैं और जो अंदर अनहद बाणी है उसको भी सुन लेते हैं।

◆❖◆

अहंकार एक घोर बीमारी है। इस बीमारी की दवा सिर्फ नाम है। नाम के अलावा इस बीमारी का कोई और इलाज नहीं है। यदि परमात्मा जीव पर दया करे, तभी अहंकार की बीमारी से वह ठीक हो सकता है।

◆❖◆

काम-वासना की यह हालत है, नींद आती नहीं है। काम सताई रखता है। रात को उठ जाता है। क्या हालत है कामी की? प्यारयो काम वासना जब जाग जाती है तो पास में खड़ा बंदा नहीं दिखाई देता है। ऐसी बीमारी है, चाहे मार पड़े, पर हटता नहीं है।

अब प्यारयो जो क्रोध है, यह किसी को ना आ जाये। पशु को पशु मार देता है। बन्दे को बंदा मार देता है।

◆❖◆

जो लालची होता है, वह झूठ का तूफ़ान बहुत करता है, माया बड़ी इकट्ठी करता है। पर यह साथ नहीं जाती है। गुरु नानक देव महाराज जी कहते हैं कि यह ठगी मारते हैं। "पापां वांजों कट्ठी ना हुंदी, मोयां साथ ना जाई।" पाप करते हैं, तभी इकट्ठी होती है, जब मरते हैं तो साथ जाती नहीं है।

◆❖◆

अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि प्यारयो, संत महात्मा किसी को डराते नहीं हैं, वह कहते हैं आओ, करो, देखो। खुद देखो।

◆❖◆

प्यारयो, यह स्थूल शरीर जो मिट्टी का है, इससे सूक्ष्म बहुत सोहना है। अब जो प्रेमी अंदर जाते हैं, उनको पता है अंदर कितनी खूबसूरती है। एक भगत जो हवा खा कर अपना गुजरा कर रहा था। जब अंदर गया तो ऊर्वशी परी ने उसे लूट लिया।

संत अजायब सिंह जी महाराज कहते थे कि जो मर्द यहाँ मिट्टी की औरतों पर कायम नहीं, वे किस तरह से अंदर कायम रहेंगे, और सही रहेंगे?

◆❖◆

हमारा मन दुनिया से जुड़ा हुआ है। गुरु जो नाम का दान देता है, वह नाम अमृत है। यह ऐसा ही है जैसे कोई जंगल में सफर करता है, जहां कोई नहीं हैं, और पांच डकैत, लुटेरे या धोखेबाज वहां आकर घेर लेते हैं। यह गुरु ही है जो हमें इनसे बचाता है। गुरु हमें पांच बुराइयों से बचाता है।

हमें अपने मन को सच्चा-सुच्चा बनाना है।

मन का शीशा साफ़ करना है। एक साफ शीशे में कोई भी अपनी परछाई देख सकता है। हे मन, अपने आप को देख और जब तू सच्चा-सुच्चा हो जायेगा, तो अपने को देख पायेगा। तेरा रूप प्रकाश है, और यह प्रकाश शब्द से मिलता है।

◆❖◆

उस परमात्मा से सब मिलना चाहते हैं, लेकिन काम-वासना, क्रोध, लोभ, निंदा, चुगली, ईर्ष्या की गंदगी से मन मैला हो गया है। मन काला स्याही जैसा गंदा हो गया है।

तुलसी साहब कहते हैं कि मन अंधा और बहरा है। अंधा देख नहीं सकता, और बहरा सुन नहीं सकता।

◆❖◆

हमेशा बाहर घूमने वाले मन को कैसे शांत करें?

यह केवल गुरु की कृपा से होता है। तभी होता है जब वह दया करता है।

गुरु के बिना कोई संसार-रुपी भवसागर को पार नहीं कर सकता। ना ही जल के सागर को, और ना ही अग्नि के सागर को पार किया जा सकता है, गुरु के बिना।

◆❖◆

सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते हैं, "हरदम तेरी मैं याद मनावां, तेरे बिना मुल कोडी ना पावां।"

◆❖◆

प्यारयो, सतगुरु अजायब सिंह महाराज जी कहते थे कि हर व्यक्ति की कुछ मनोकामनाएं ही पूरी होती हैं, और बाकी अधूरी रह जाती हैं। हर किसी की इच्छाएं अधूरी होती हैं। लेकिन जब अंदर जाकर गुरु के दर्शन करते हैं, तब सभी काम पूरे हो जाते हैं। सभी आशाएं पूरी हो जाती हैं।

◆❖◆

आत्मा और मन की स्थूल गांठ लगी हुई है। धीरे-धीरे इसको खोलना है, फिर आत्मा का अंदर जाकर परमात्मा से मिलना आसान हो जाता है।

भक्ति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाएं मन की बनाई होती हैं।